ऋतुरंग

भारत सरकार

भारत मौसम विज्ञान विभाग

अंक : 1 **वर्ष : 2014**

भारत मौसम विज्ञान विभाग
पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय
प्रादेशिक मौसम केन्द्र, हवाई अड्डा
नागपुर 440005 - (महाराष्ट्र)

ऋतुरंग

(प्रादेशिक मौसम केन्द्र,नागपुर की गृह पत्रिका)

प्रमुख संरक्षक

डॉ. पी.के.नंदनकर

उपमहानिदेशक

प्रादेशिक मौसम केन्द्र,नागपुर

संरक्षक

एच.ए.के.सिंह

निदेशक,प्रा.मौ.कें.नागपुर

संपादक

श्रीमती शांता उन्नीकृष्णन, वरीष्ठ हिंदी अनुवादक

सह संपादक

श्री. पी.एल.देवांगन, सहायक मौसम विज्ञान-II

सहयोगी सदस्य

1. श्री.एस.एन.बिद्यांता,वै.स. 2. श्री.एम.आर.कान्होलकर,वै.स. 3. एम.एम.फडके,वै.स.

पत्र व्यवहार का पता

संपादक- ऋतुरंग, प्रादेशिक मौसम केंद्र, हवाई अड्डा, नागपुर-440005

(आवरण पृष्ठ- गंगटोक शहर (सिक्किम) का पर्वतीय दृश्य। छायाकार- डी.एस.गायकवाड,सहायक मौसम विज्ञानी)

(इस अंक में प्रकाशित रचनाओं से संपादक मंडल सहमत हो अनिवार्य नहीं एवं रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं जिम्मेदार है ।)

महानिदेशक

भारत मौसम विज्ञान विभाग

मौसम भवन, लोदी रोड

*नई दिल्ली- **110003***

संदेश

मुझे यह जानकर बेहद प्रसन्नता हुइ कि प्रदेशिक मौसम केद्र-नागपुर की विभागीय हिंदी गृह पत्रिका ***ऋतुरंग*** के प्रथम अक का प्रकाशन होने जा रहा है।

विभागीय हिंदी पत्रिका का प्रकाशन हमारी भाषायी स्वतत्रा के प्रति अपनी दृढ़ता का शुभ संकेत देता है, इससे राजभाषा के प्रचा -प्रसार मे हम निरतर अग्रसर होगे। यह प्रयास अत्यत अभिनदनीय एव सराहनीय है जो भविष्य मे ऋतुरग के उत्तरोत्तर विकास मे सार्थक सिध्द होगा।

मै पत्रिका के सपादक मडल और उसमे योगदान देने वाले सभी रचनाकारो को उन प्रयासो के लिए बधाइ देता हूँ। साथ ही नागपुर के मौसम परिवार को *ऋतुरंग* की सफलता के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

(डॉ. लक्ष्मण सिंह राठोड़)

उपमहानिदेशक
प्रादेशिक मौसम केंद्र
नागपुर-440005

उपमहानिदेशक महोदय की कलम से

मुझे यह जानकर अत्यत हर्ष हो रहा है कि प्रादेशिक मौसम केन्द्र, नागपुर व्दारा हिंदी गृह पत्रिका **'ऋतुरंग'** कि प्रथम अक का प्रकाशन किया जा रहा है ।

यह गृह पत्रिका हिंदी के प्रचार - प्रसार मे एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी । कार्यालय के अधिकारियो एव कर्मचारियो के रचनात्मक प्रतिभा को उभारने मे यह एक अच्छा अवसर प्रदान करेगी ।

पत्रिका की सफलता के लिये रचनाकारो को हार्दिक बधाइ, तथा संपादक मंडल को शुभकामनाएँ देते हुए मै पत्रिका के सतत विकास की कामना करता हूँ ।

(**डॉ. पी.के.नंदनकर**)

निदेशक

प्रादेशिक मौसम केंद्र

नागपुर-440005

संदेश

गृह पत्रिका ऋतुरग के प्रथम अक का प्रकाशन सपूर्ण मौसम कार्यालय के लिए अत्यत गर्व का क्षण है । कार्मिको व्दारा सुंदर, ज्ञानवर्धक एव स्तरीय रचनाएँ राजभाषा के प्रचार - प्रसार मे एक अहम भूमिका निभाएगी ।

इस प्रशसनीय प्रयास के लिए मै सभी रचनाकारो एव सपादक कार्य से जुड़े अधिकारियो को बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ ।

साथ ही भविष्य मे भी इस पत्रिका की सफलता एव नियमित प्रकाशन की कामना करता हूँ ।

(**डॉ. एच.ए.के.सिंह**)

वरीष्ठ हिंदी अधिकारी
मौसम विज्ञान के महानिदेशक का
कार्यालय,मौसम भवन, लोदी रोड
*नई दिल्ली- **110003***

संदेश

प्रादाशक मासम कन्द्र, नागपुर म भाता - भाता का ऋतुआ क रग सजाए ऋतुरग क आगमन पर बहुत - बहुत बधाइ । ाहदा गृह - पात्रका ऋतुरग का प्रकाशन वास्तव म सराहनाय प्रयास ह । ऋतुरग अपन म सराबार करत हुए सभा का अपना बात अपना भाषा म कहन क ालए प्रात्सााहत करगा एसा मरा ावश्वास ह । यह शुभ सकत ह ाक कायालय म वज्ञाानक एव तकनाका ावषया का ाहदा भाषा म ालखा जा रहा ह । इस बात स सभा अवगत ह ाक भारत क सावधान म 14 ासतम्बर 1949 क ादन ाहदा भाषा का दश का राजभाषा का दजा ादया गया ह । अत: राजभाषा सबधा आदशा का अनुपालन का दाााय्त्व हम सभा का ह आर इसा ादशा म उठाए गए एक नए कदम का नाम ऋतुरग ह । ाहदा ादवस क इस शुभअवसर पर ऋतुरग का सतरगा आभा चारा तरफ फल यह वास्तव म गारव का बात ह । म ऋतुरग क सफल प्रकाशन का कामना करता हू ।

हाादक बधाइ!!

(रेवा शर्मा)

सहायक मौसम विज्ञानी-I(प्र)
एवं हिंदी संपर्क अधिकारी
प्रादेशिक मौसम केंद्र
नागपुर-440005

संदेश

यह अत्यांधक प्रसन्नता की बात है कि कायोलय व्दारा अपनी गृह पांत्रका का प्रथम अक प्रकाशित किया जा रहा है । इस पांत्रका के प्रकाशन होने से हम अपने सवैधानिक कतेव्यो का पालन करते हुए राजभाषा के प्रचार - प्रसार मे अपना योगदान दे सकते हैं ।

पांत्रका के माध्यम से हम कामिको के अदर छिपे हुए 'लेखन कला' को विकासित कर सकते है ।

इस पांत्रका के सतत विकास एव प्रकाशन के लिए मेरी हादिक शुभकामनाएं ।

(□. □. **चिमोटे)**

संपादकीय

नागपुर की गृह पत्रिका ***ऋतुरंग*** के प्रथम अक को आपके समक्ष समर्पित करते हुए अत्यत हर्ष हो रहा है । काफी विचार मथन के पश्चात् मन यह कह उठा कि हर व्यक्ति के अदर कोइ न कोइ कला छिपी है । क्यो न इसे हम गृह पत्रिका के माध्यम से उजागर करे । मन की भावनाएँ जब कागज पर उतर आती है तब वह कोइ न कोइ कृति का रूप धारण कर लेती है ।

कार्यालय के कार्मिको के अदर छिपी हुइ भावनाओ को सहेजकर इस पत्रिका व्दारा व्यक्त करने का प्रयास किया गया है । आशा है कार्मिको की भावनाएँ पाठको के हृदय को झकृत करेगी ।

सपादक मडल की पूरी कोशिश रही है कि पत्रिका मे किसी प्रकार की कोइ चूक ना हो, फिर भी यदि कोइ गल्ती दृष्टिगत होती हो तो उसे अवश्य ही ध्यान मे लाएँ साथ ही अपने सुझावो से अवगत कराएँ ताकि पत्रिका मे और अधिक निखार आ सके ।

(शांता उन्नीकृष्णन)

उप-सम्पादकीय संदेश

प्रादेशिक मौसम केन्द्र नागपुर के अधिकारियों व कर्मचारियों के सहयोग व हमारे सम्पादक मंडल के अथक प्रयासों से गृह पत्रिका ऋतुरंग के प्रथम अंक प्रकाशित कर पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे बहुत ही खुशी हो रही है। आशा है कि यह पत्रिका आपके लिये उपयोगी व ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी। इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी रहे अधिकारियों व कर्मचारियों के साथ ही सम्पादक मण्डल को धन्यवाद ज्ञापित करते हुए मैं प्रा.मौ.के. नागपुर के उप-महानिदेशक महोदय का भी आभार व्यक्त करता हुँ जिन्होंने इस पत्रिका के प्रकाशन की प्रेरणा व अनुमति प्रदान की है। तथापि इसके आगे के अंकों का प्रकाशन किया जाना संभाव्य है जिसे अधिक सुरूचिपूर्ण, सचित्र व अनेक ज्ञानवर्धक विषयों से युक्त बनाये जाने का हर-संभव प्रयास किया जायेगा। इसके लिये पाठकों के अमूल्य विचार व सुझाव ही सशक्त माध्यम होगी। अतएव आपके अमूल्य सुझाव एवं सुविचार सस्नेह आमंत्रित हैं।

यह पत्रिका कार्यालय के कर्मचारियों व अधिकारियों को हिन्दी राजभाषा में अधिकाधिक कार्य करने की प्रेरणास्वरूप प्रकाशित किया गया है। अतएव मैं सम्माननीय पाठकों से भी अनुरोध करता हूँ कि इस पत्रिका के लेखकों से प्रेरणा लेते हुए हिन्दी राजभाषा का दैनिक कार्यालयीन कार्यों में अधिकाधिक प्रयोग करें। किसी ने ठीक ही कहा है कि-

राजभाषा होती है ममता का भंडार, राजभाषा ही अनेकता में एकता का सार।

हिन्दी में है सम्पूर्ण विकास की परिभाषा, क्यों न हो वह देश की राजभाषा।

(पी. एल. देवांगन)

अनुक्रमणिका

लेख/रिपोर्ट

- पवन उर्जा 11
  - **पी.एल.देवांगन**
- प्रा.मौ.के.नागपुर द्वारा राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए लागु की गइे योजनाएं 15
  - हिंदी अनुभाग
- पिछले पाच वर्षो मे प्रेषित/प्राप्त पत्रो की स्थिति 16
  - **हिंदी अनुभाग**
- सुविचार 17
  - **डी.पी.सांधोकर**
- हिंदी साहित्य के मूधन्य महाकवि:कबीर 18
  - **डी.एस.गायकवाड**
- संतरा नगरी नागपुर 22
  - **शांता उन्नीकृष्णन**
- हिमानी 26
  - **ए.वी.गोडे**
- अल्पावधि मौसम पूर्वानुमान की कार्यपध्दति 31
  - **डॉ.पी.के.नंदनकर**
- प्रा.मौ.केन्द्र नागपुर - शहर के समग्र विकास मे योगदान 33
  - **एस.के.कोंगे**
- समृद्ध राष्ट्र का निर्माण 35
  - **शांता उन्नीकृष्णन**
- कृषि वसंत(रिपोट) 38
  - **एस.एन.बिद्यांता**
- मौसम रिक्र.क्लब(रपाट) 43
  - एस.ए.पवार

कविता

- ऋतुरग स्वागत है 10
  - डॉ.रविंद्र आकरे
- मित्रता 24
  - डी.पी.सांधोकर
- मेरी बेटी 25
  - डी.एस.गायकवाड
- हिंदी पखवाडा 36
  - एम.आर.कान्होलकर
- यम 41
  - **एस.एन.बिद्यांता**
- विरह 44
  - डी.पी.सांधोकर
- **हिंदी पखवाडा-2013(फोटो)45**

ऋतुरंग स्वागत है !

डॉ. रविंद्र आकरे 'रवि'
स.मौ.वि.-II

प्रथम आगमन से
खिल उठा हमारा मन !
महक गया यह गुलशन
'ऋतुरंग' के रूप मे
क्यो न करें,
हम तुम्हारा स्वागत !

लेख-कविताएँ-कहानियाँ
रचनाएँ-चुटकुले
आदि से भरी हुइ
दुल्हन जैसी सजी हुई !
क्यों न करे,
हम तुम्हारा स्वागत !

विचारो-मतो का
भंडार है तू !
ज्ञान के सागर से
इस गृह को सजाओगी
क्यो न करे,
हम तुम्हारा स्वागत !

तुम सस्कारो को
अदा करोगी
सुख - शांती - एकता
का दूत बनोगी !
क्यो न करे,
हम तुम्हारा स्वागत !

अच्छा आपका काम होगा
तो अच्छा आपका नाम रहेगा !
आपके सिर पर ताज रहेंगा
तुम्हारी दुनिया में 'राज होगा
क्यों न करें,
हम तुम्हारा स्वागत !

'रवि' करता है वंदन
अचानक आगमन का अभिनदन
देता है, फूलों का गुच्छा !
ढ़ेर सारी शुभेच्छा
अत में, क्यों न करे,
'ऋतुरंग' हम तुम्हारा स्वागत !

****

पवन ऊर्जा (Wind Energy)

पी.एल.देवांगन, स.मौ.वि. ।।

सूर्य, ऊर्जा का परम स्त्रोत है । सूर्य से ऊर्जा निकल कर पृथ्वी के अन्य प्राकृतिक वस्तुओं जैसे हवा, पानी, पहाड़ - पर्वत, जीव- जन्तुओं, पेड़-पौधों, रासायनिक पदार्थ आदि में संचित होती है जिसे हम भिन्न - भिन्न रूपो में देखते और उपयोग में लाते हैं । इन पदार्थों से ऊर्जा का निष्कर्षण आज यथोचित मात्रा में किया जा रहा है । ऊर्जा के स्त्रोत दो प्रकार की होती है, जिन्हें हम सतत व असतत स्त्रोत के रूप में जानते है । सतत स्त्रोत वे स्त्रोत हैं जो कभी समाप्त नहीं होते जबकि असतत स्त्रोत से ऊर्जा का उत्पादन ईधन के समाप्त हो जाने पर बन्द हो जाता है । पवन ऊर्जा सतत ऊर्जा स्त्रोत का एक रूप है जो तब त चलता रहेगा जब तक ब्रम्हाड मे वायु विद्यमान है ।

पवन एक प्रकार का सौर ऊर्जा ही है जो सूर्य व्दारा वायुमडल के असमान तपन से गति उर्जा के रूप में विद्यमान होता है । पृथ्वी के धरातल का ऊँचा - नीचा व असमान होना, पृथ्वी के घूर्णन व परिभ्रमण गति आदि के कारण धरातल का असमान तपन होता है जिससे वायुमंडल का तापमान भी प्रभावित होता है । वायुमंडल का तापमान मे असमानता के कारण गरम क्षेत्र की हल्की वायु उपर उठकर निम्न दाब के क्षेत्र का निर्माण करती है जिसे संयोजित करने के लिये ठंडे व अधिक वायुदाब वाले क्षेत्र से भारी हवायें निम्न दाब क्षेत्र की ओर प्रवाहित होती है और यही पवन कहलाता है । इसका बहाव पृथ्वी के धरातल की बनावट, पहाड़- पर्वतों, मैदानी सपाट व जलीय क्षेत्रों, विभिन्न अवरोधको की उपस्थिति - अनुपस्थिति पर निर्भर करता है । पवन के इसी बहाव को मानव पवन उर्जा के रूप में नौका चालन, पतंग उडाना, हवाई जहाज व पैराशूट उडाना, सिंचाई के लिये पानी खींचना, चक्की चलाकर अनाज पीसना आदि मे करता रहा है । आजकल प ऊर्जा का सर्वाधिक और सर्वोत्तम उपयोग विद्युत उत्पादन में ही होता है जबकि ऊर्जा के क्षेत्र में पवन उर्जा की अन्य उपयोगितायें लगभग नगण्य है ।

पवन में गतिज ऊर्जा होती है जिसे पवन चक्की जैसे उपकरण से गुजारकर यांत्रिक ऊर्जा मे बदल लिया जाता है । पवन चक्की से विद्युत उत्पादन की विधि किसी घरेलु विद्युत पंखा से पवन उत्पादन का विपरीत कार्य होता है । घरेलु पंखा में विद्युत ऊर्जा को यांत्रिक ऊर्जा में बदलकर पंखा को घुमाया जाता है जिससे हवा बहने लगती है । इससे ठीक विपरीत पवन को जब पवन चक्की से गुजारा जाता है तो चक्की के पंखो में हवा का दबाव पड़ने से चक्की घुमने लगती है । इस चक्की का संपर्क एक टरबाइन से होता है जो चुम्बकीय क्षेत्र मे घूम सकता है । इससे विद्युत उत्पन्न होती है । बड़ी - बड़ी कम्पनियों व व्यवसायिक संगठनों व्दारा दर्जनों पवन चक्कियों को पवन खेतो मे लगाया जाता है ।ऐसे ही सैंकडों खेत बनाकर बड़ी मात्रा में विद्युत उत्पादन किया जाता है । पिछले 30 वर्षों में भारत में व्यापारिक स्तर पर विद्युत उत्पादन किया गया है । विद्युत उत्पादन में वर्ष 2005 से 2008 तक तेजी से वृध्दि हुई है जो इन तीन वर्षों में दुगुना से भी अधिक पहुँच चुका है ।

पवन ऊर्जा के उपयोग का इतिहास बहुत ही पुराना है । मानव व्दारा मध्य युगीन काल मे लगभग 5000 वर्षों से पवन ऊर्जा का उपयोग विभिन्न कार्यों में किया जाता रहा है । इतिहास में इस बात के स्पष्ट प्रमाण है कि पवन ऊर्जा का उपयोग ईसा पूर्व 17 वीं शताब्दी

मे बेबीलोन के राजा हमूराबी व्दारा सिचाइ के लिए पानी खीचने और अनाज के दाने पीसः के लिये किया था । ईसा पूर्व 300 में लंका के सिंहलियों व्दारा अनुराधापुर व उसके आसपास के क्षेत्र में मानसूनी तेज हवाओं का उपयोग आग के भट्टियों को उत्तेजित करने मे किया जाता था । इन भट्टियों को हवाभिमुख दिशा में बनाते थे जिसमें तेज हवा से आग को उत्तेजित कर लगभग 1100 डिग्री सेल्सियस तक तापमान प्राप्त किया जाता था ।

इसवी सन के प्रथम शताब्दी में पवन ऊर्जा व्दारा वाद्य यंत्र बजाने का प्रमाण मिला है । इसके बाद 7 वीं शताब्दी में अफगानिस्तान के सिस्तान नामक शहर में पहली बार उर्ध्व अक्षीय पवन चक्की का निर्माण किया गया था । 11 वीं सदी में मध्यपूर्व के लोगों ने पवन चक्कियों का उपयोग व्यापारिक नाव चलाने के लिये किया जिसे धीरे -धीरे यूरोप में प्रसार मिला । 19 वीं सदी में पवन ऊर्जा का उपयोग घरेलू औद्योगिक इकाईयों में विद्युत उत्पादन के साथ साथ जलाशयो से पा खींचने, अनाज के दाने पीसने, दानों से कचरा अलग करने में किया जाने लगा और 20 वी सदी के प्रारभ से ही पवन ऊर्जा का उपयोग मुख्य रूप से विद्युत उत्पादन में ही हो रहा है ।

पवन उर्जा की उपयोगिता जैविक ईधन या पेट्रोलियम की उपलब्धता मे परिवतन के साथ बदलता रहता है । व्दितीय विश्व युध्द के समय जब पेट्रोलियम के दाम घटने लगे तब पवन टरबाइन का उपयोग भी कम होने लगा लेकि न 1970 में पेट्रोलियम के दाम बढ़ने से विश्व भर में पवन टरबाइन की उपयोगिता में बढ़ोत्तरी हुइ । धीरे-धीरे पवन उर्जा के दोहन तकनीक में भी विकास होता गया । प्रारंभ में पवन चक्कियों द्वारा सीधे ही यांत्रिक कार्य लिया जाता था किन्तु 20 वीं सदी के अंत में इसका उपयोग टरबाइन चलाकर विद्युत उत्पादन में होने लगा और इस विद्युत ऊर्जा का उपयोग विभिन्न यांत्रिक कार्यों के लिए होता है । पेट्रोलियम उत्पादन के लिये विभिन्न देशों में प्रतिद्वंद्वी से युध्द की स्थिति बनी हुई है । इसलिये पवन ऊर्जा का अधिक इस्तेमाल अब देश की आत्म निर्भता का मानक बनता जा रहा है ।

पवन विद्युत ऊजा सयत्र लगाने के लिये स्थल का चुनाव भी पेचीदा होता है । इसमे लगने वाले पवन चक्की की गति पर्याप्त अधिक रखने के लिये उपयुक्त चाल वाले पवन की आवश्यकता होती है जिससे पर्याप्त मात्रा का विद्युत उत्पादन किया जा सके । ये संयंत्र ऐसे स्थान में लगाये जाते हैं जहाँ वर्ष भर हवा का प्रवाह पर्याप्त गति से मिल सके । यहाँ यह जानना जरूरी हो जाता है कि पृथ्वी से ऊंचाई के साथ - साथ हवा की गति भी बढ़ता जाता है इसलिये बड़े- बड़े खम्भों में पवन चक्कियो को लगाते है । यह पवन चक्कियां उर्ध्व अक्षीय और क्षितीज अक्षीय दोनों ही प्रकार की होती है । इसके लिये खुले मैदानी क्षैत्रों गोलीय टीलों की चोटियों, पर्वतों के बीच के खुले स्थानों जैसे वायुरोधकों की अनुपलब्धता वाले स्थान उपयुक्त होते हैं ।

पवन ऊर्जा के उपयोग से विद्युत उत्पादन मे बहुत से फायदे है जैसे कच्चा ईंधन के रूप मे पवन का उपयोग होता है जो संसार के किसी भी कोने में लगभग मुफ्त में उपलब्ध है । पवन विद्युत उत्पादन में गौण उत्पाद के रूप में प्रदूषण कारक रसायन नहीं निकलते, इसलिये पर्यावरण प्रदूषण नहीं होता । समुद्र तटीय क्षेत्रों, टीलों की चोटियों, पर्वतों के बीच के खुले स्थानों में वायु प्रवाह लगभग सतत होता है इसलिये पवन की सतत आपूर्ति में खर्चे कम होता है । हम यह भी जानते है कि पवन ऊर्जा कभी समाप्त नहीं होगा इसलिये यह कहा जा सकता है कि कच्चे माल की कमी अड़े नहीं आयेगी । पवन चक्कियों को प्राय:

निजेन स्थान मे लगाया जाता है जिससे भूखड की उपलब्धता सस्ता व आसान होती है, इतना ही नहीं खेतों - खलिहानों में किसानों से किराये पर जमीन लेकर भी उसमे पवन सयत्र लगा सकते हैं और किसानों व्दारा उन खेतों में अनाज उत्पादन भी जारी रखा जा सकता है । इसके लिये विशेष औद्योगिक क्षेत्र बनाने की जरूरत नहीं होंती ।

पवन विद्युत उत्पादन के इतने फायदे के साथ ही इसमे कुछ दोष भी जैसे उत्पादित विद्युत ऊर्जा की सतत आपूर्ति के लिये विद्युत ऊर्जा के संग्रहण की आवश्यकता होती है । इसके लिये बैटरी का उपयोग जरूरी हो जाता है । संयंत्र लगाने के लिये शुरूवात मे ही बहुत अधिक धन लगाना पड़ता है, समय के साथ- साथ आबादी बढ़ने से विनिर्माणों के कारण संयंत्र वाले स्थान पर वायु प्रवाह मे व्यवधान आने से पवन का सतत उपलब्धता प्रभावित होता है ।उत्पादन स्थल निर्जन स्थान पर होने के कारण भी उपयोग वाले स्थानों तक विद्युत ऊर्जा ले जाने में अधिक खर्च आता है । विद्युत उत्पादन वाले भूखंडो का अन्य औद्योगिक उपयोग नहीं हो पाता जो एक हानिप्रद व्यवस्था साबित हो सकता है । पवन वायुमंडल में सघनता में नहीं मिलता इसलिये इससे बनने वाली विद्युत ऊर्जा पर्याप्त नहीं होता है । पवन चक्कियों के पंखे कई बार पक्षियों के लिये जानलेवा होते हैं ।

पवन ऊर्जा से विद्युत उत्पादन का तकनीक प्रदूषण मुक्त और अधिक निरापद होने के कारण पवन चक्कियों के निर्माण की तकनीक में भी धीरे - धीरे विकास हुआ है सदियों पहले इरान के लोंगों ने पवन चक्की बनाया था जो घर्षणयुक्त पैंडल चक्के के समान होते थे और रस्सी या पट्टे की सहायता से उनसे कार्य लिया जाता था । बाद में हालैंड के लोगो ने पवन चक्की के आकार को बदल कर उसे आधुनिक पंखों की पत्तियों जैसा धारदार बना दिया था जो वर्तमान में भी प्रचलन में है । उन्ही दिनों अमेरिका में छोटे - छोटे पवन चक्की बनाया गया जो ग्रमीण क्षेत्रों में विद्युत प्रदाय के लिये काम में आते थे । 21 वीं सदी में विद्युत ऊर्जा की मांग में हुई वृष्टि ने पवन चक्कियों की उपयोगिता को और हवा दे दी है । इसके आधुनिक और अधिक दक्षतायुक्त मॉडल का निर्माण आवश्यक सा हो गया है । प्रारंभ में पवन ऊर्जा को जिस ढंग से नकारा गया था आज वह उतना ही महत्वपूर्ण हो गया है । आज आवश्यकता इस बात की है कि पवन ऊर्जा का अधिक से अधिक मात्रा में दोहन कर सकने वाले संयंत्र स्थापित हो । वर्तमान पवन चक्की पर आपतित पवन का 20 से 30 प्रतिशत भाग ही उसे चलाने में उपयोग होता है और शेष भाग चला जाता है । ऐसे मे पवन चक्की का निर्माण इस तरह किया जाना होगा जो न केवल समस्त अपतित पवन बल्कि आसपास के पवन को भी संचित कर उसे यांत्रिक ऊर्जा में बदल सके । साधारण मध्यम परिवारों के लिये उपयुक्त सस्ते घर्षण रहित, न्युनतम भारयुक्त छोटे- छोटे घरेलू पवन चक्की का निर्माण आज की परम आवश्यकता है ।

पर्यावरण की दृष्टि से भी पवन ऊर्जा का उपयोग महत्वपूर्ण है । 20 वी सदी मे सत्तर के दशक में जैव ईंधन की कमी से पवन शक्ति के उपयोग को बढ़ावा मिला था । इसके बाद नब्बे के दशक में वैज्ञानिकों व्दारा ग्लोबल वार्मिंग और पर्यावरण परिवर्तन के अध्ययन ने विश्वस्तरीय ग्रीन हाउस गैसों के उत्पादन में कमी लाये जाने की आवश्यकता पर ध्यान देने को मजबूर कर दिया है । जैविक ईंधन या पेट्रोलियम के उपयोग से बहुत अधिक मात्रा मे

ग्रीन हाउस गैसे निकलती है जो पर्यावरण मे स्थित ओजोन परत की मोटाई को घटाने के साथ ही सूर्य से आने वाली हानिकारक अल्ट्रावायलेट किरणों की मात्रा को बढ़ाने लगी है । इस स्थिति से निपटने के लिये ऐसी युक्ति की आवश्यकता जो ग्रीन हाउस गैसें पैदा ही न करें जो सोने में सुहागा है । इसलिये पिछले 10 वर्षों में पवन ऊर्जा के दोहन पर विश्वस्तरीय अभिलाषा जागृत हुई है । एक सर्वेक्षण के अनुसार पृथ्वी के चारों ओर प्रवाहित होने वाली पवन की मात्रा पाँच कबाडीलियन टन है जिसमें से यदि दस प्रतिशत मात्रा को ही ऊर्जा के रूप में उपयोग किया जाये तो भी विश्व के समस्त ऊर्जा आवश्यकता को पूरा किया जा सकता है । अतएव पवन ऊर्जा के दोहन में वृध्दि की परम्परागत ऊर्जा उत्पादन का प्रमुख स्थानापन्न हो सकता है ।

छत्तीसगढ़ मे पवन ऊर्जा का उपयोग बहुत ही कम मात्रा मे किया जा रहा है जबकि महाराष्ट्र में 21 अलग अलग जगहों पर 73 मेगावाट क्षमता के पवन विद्युत संयंत्र कार्यरत है वही गुजरात में 168 मेगावाट और तमिलनाडू में 76 मेगावाट क्षमता के पवन ऊर्जा संयंत्र लगाये गये हैं । ऐसे ही राजस्थान के जैसलमेर व जोधपुर जिलों में 2 मेगावाट क्षमता के संयंत्र प्रयोगिक तौर पर लगाये गये है । छत्तीसगढ़ राज्य अक्षर ऊर्जा एजेन्सी क्रेडा व्दारा ऊर्जा के क्षेत्र में विभिन्न प्रयोग किये जा रहे है । समुद्र तट से पर्याप्त अधिक दूरी के कारण यहाँ पवन ऊर्जा संयंत्र की सफलता पर प्रश्नचिन्ह लग जाता है ।

पवन ऊर्जा संचयन के लिये खुले मैदानी क्षेत्रों, गोलीय टीलो की चोटियो, पर्वतो के बीच के खुले स्थानों के अलावा शहरी क्षेत्रों में उँचे भवनों की चोटियों, बड़े बड़े खम्बों - टावरों आदि में पवन चक्की लगाया जा सकता है । गर्मी और मानसून की ऋतु में यहाँ लगभग निम्न वायुदाब क्षेत्र बना रहता है जिसके प्रभाव से इन दिनों अधिक तेज हवाएँ चलती है । इन्हें विद्युत ऊर्जा में बदलकर उसे संग्रहित करने और परम आवश्यकता के समय उपयोग मे लाने की तकनीक का विकास किया जाना लाजमी होगा । भारत जैसे
विकासशील देश में पवन ऊर्जा के समान निरापद, सर्वत्र उपलब्ध स्त्रोतो के व्दारा ऊर्जा उत्पादन की अत्यंत आवश्यकता है, जिससे सिंचाई, ग्रामीण विद्युतीकरण और अन्य ग्रामीण सुविधाये मुहैया कराई जा सके ।

****

कृत्रिम सुख की बजाय ठोस उपलब्धियों के पीछे समर्पित रहिये ।

- ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

कार्यालयीन स्तर पर प्रादेशिक मौसम केन्द्र, नागपुर द्वारा राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए लागू की गई योजनाएं

1. कार्मिको को हिंदी मे कार्य करने मे आसानी हो इसके लिए हिंदी शिक्षण योजना द्वारा आयोजित प्रबोध / प्रवीण / प्राज्ञ प्रशिक्षण मे कार्मिको को भेजा जाता है । 90 प्रतिशत कार्मिक प्रशिक्षित हो चुके हैं, हर वर्ष कार्मिकों को प्रशिक्षित करने की व्यवस्था लागू की गई है ।
2. हिंदी में कार्य कर रहे कार्मिको के लिए कार्यालय मे प्रोत्साहन योजना लागू की गइ है और प्रति वर्ष कार्मिकों को पुरस्कार प्राप्त प्राप्त होता है ।
3. कार्यालय का वेब - पेज व्दिभाषी में तैयार किया गया है एव ' जलवायु विवरण व्दिभाषी में जारी की जाती है ।
4. कार्यालय के कर्मचारियों / अधिकारियो के लिए आंतरिक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है । जिसमें हिंदी टिप्पणी एवं पत्राचार के अलावा कम्प्युटर पर हिंदी में सुगमता तथा शीघ्रता से कार्य करने के लिए कार्यालय के अधिकारियों द्वारा युनिकोड का प्रशिक्षण भी दिया जाता है ।
5. कार्यालय की गतिविधियों का हिंदी मे जानकारी देने के लिए पॉवर पाइंट प्रस्तुतीकरण की व्यवस्था की गई है ।
6. कार्यालय में मौसम संबंधी परिचर्चा हिंदी मे की जाती है ।
7. कार्यालय का प्रगति विवरण हिंदी में बनाया जाता है और मेट नेट पर लोड किया जाता है ।
8. अधिक से अधिक कार्य हिंदी मे करने के उद्देश्य से हिंदी कम्प्युटर प्रशिक्षण के लिए कार्मिकों को राष्ट्रीय विद्युत प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षण दिया गया।
9. कार्मिकों की सुविधा के लिए Climate of Nagpur पुस्तक का हिंदी अनुवाद किया गया ।
10. कार्यालय में नियमित रूप से आज का शब्द व्दिभाषी मे लिखा जाता है ।
11. कार्यालय मे 28 फरवरी को विज्ञान दिवस मनाया जाता है तथा 23 मॉर्च को विश्व मौसम विज्ञान दिवस मनाया जाता इस अवसर पर कार्यालय में प्रदर्शनी भी लगाई जाती है । आगंतुकों को कार्यालय की गतिविधियों के संदर्भ में हिंदी में जानकारी दी जाती है ।
12. कार्यालय में आयोजित बैठकों में परिचर्चा का माध्यम हिंदी में ही होता है ।

****

पिछले पांच वर्षों में हिंदी में प्राप्त/प्रेषित पत्रों की स्थिति

त्रैमासिक	हिन्दी में प्राप्त पत्रों की संख्या	हिन्दी पत्रों के अंग्रेजी में दिये गये उत्तर की संख्या	**क** क्षेत्र को भेजे				**ख** क्षेत्र को भेजे				**ग** क्षेत्र को भेजे			
			हिन्दी /द्विभाषी पत्रों की संख्या	केवल अंग्रेजी पत्रों की संख्या	कुल पत्रों की संख्या	क क्षेत्र को पत्रों की संख्या का प्रतिशत	हिन्दी /द्विभाषी पत्रों की संख्या	केवल अंग्रेजी पत्रों की संख्या	कुल पत्रों की संख्या	ख क्षेत्र को पत्रों की संख्या का प्रतिशत	हिन्दी /द्विभाषी पत्रों की संख्या	केवल अंग्रेजी पत्रों की संख्या	कुल पत्रों की संख्या	ग क्षेत्र को पत्रों की संख्या का प्रतिशत
2009-10(1)	468	9	107	8	115	93	256	3	259	99	0	0	0	--
2009-10(2)	720	66	249	135	384	65	276	9	285	97	0	0	0	--
2009-10(3)	696	0	220	157	377	58	189	9	198	95	4	4	8	50
2009-10(4)	869	0	205	108	313	65	201	3	204	99	8	2	10	80
2010-11(1)	741	42	184	73	257	72	200	4	204	98	4	2	6	67
2010-11(2)	709	25	319	68	387	82	434	12	446	97	2	12	14	14
2010-11(3)	409	16	155	15	170	91	91	1	92	99	2	1	3	67
2010-11(4)	831	7	283	46	329	86	118	5	123	96	1	1	2	50
2011-12(1)	606	0	268	59	327	82	121	14	135	90	0	0	0	--
2011-12(2)	697	10	378	148	526	72	205	16	221	93	1	2	3	33
2011-12(3)	497	7	484	208	692	70	255	20	275	93	0	0	0	--
2011-12(4)	559	6	466	153	619	75	227	23	250	91	0	0	0	--
2012-13(1)	602	12	447	57	504	89	238	22	260	92	2	1	3	67
2012-13(2)	690	6	511	48	559	91	229	7	236	97	0	0	0	--
2012-13(3)	469	10	353	58	411	86	259	16	275	94	3	1	4	75
2012-13(4)	665	6	478	45	523	91	235	14	249	94	3	1	4	75
2013-14(1)	839	11	639	110	749	85	167	9	176	95	0	0	0	--
2013-14(2)	754	10	538	62	600	90	242	17	259	93	2	1	3	67
2013-14(3)	691	2	542	61	603	90	248	13	261	95	2	1	3	67
2013-14(4)	667	3	476	38	514	93	224	8	232	97	10	0	10	100

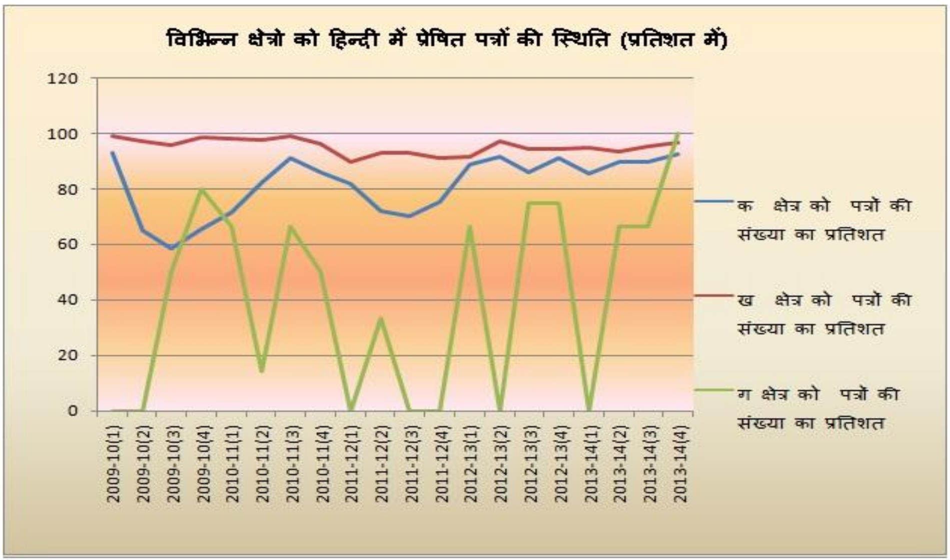

****

सुविचार

डी.पी.सांधोकर, स.मौ.वि.-II

1. एक खूबसूरत दिल हजार खूबसूरत चेहरों से ज्यादा बेहतर होता है । इसलिए जिंदगी में हमेशा चुनो ऐसे लोग, जिनका दिल चेहरे से ज्यादा खूबसूरत हो ।

2. किसी से उम्मीद किये बिना उसका अच्छा करो, क्योंकि किसी ने कहा है कि, जो लोग फूल बेचते है, उनके हाथ में खूशबू अक्सर रह जाती है ।

3. कभी भी किसी के आँखों में अश्रु नहीं आने देना, किसी को हँसाना नहीं आता चलेगा, लेकिन अश्रुओं का कारण नहीं बनना।

4. क्यों कहते हो कि, कुछ बेहतर नहीं होता सच यह है, जैसा चाहो वैसा नहीं होता ।
   कोई तुम्हारा साथ न दे तो गम ना कर, खुद से बड़ा दुनिया में कोई हमसफर नहीं होंता ।

5. अगर सीधी उंगली से घी नहीं निकलता, तो घी को गरम करो, हर काम (बात) में टेढ़ा मार्ग नहीं हो । विचार बदलो, समाज बदलेगा, देश बदलेगा और देश आगे बढ़ेगा।

****

हिंदी साहित्य के मूर्धन्य महाकवि:कबीर

डी.एस.गायकवाड, स.मौ.वि.-।।

भारत देश को आर्यो,संत-महतो तथा महापुरूषो एव लोकनायको की भूमि कहा है। इसलिये है कि- ये परम-पावन है उनके सहवास-सन्नीध्य से, उनके साँसो के परिमल से, उनके अमृत वचनो-वाणी से, उनके पद-स्पर्श से।'*जहाँ डाल-डाल पर सोनें कि चिडियाँ करती हैं बसेरा वो भारत देश हैं मेरा*'- ये वर्णन उक्त विधान की गवाही देता हैं। भारत में लोकनायकों की परम्परा श्रीकृष्ण से लेकर अद्‌यावधि महात्मा गांधी तक आयी हैं। गौतमबुद्ध, स्वामी रामानुजाचार्य, महाप्रभु वल्लभाचार्य, गोस्वामी तुलसीदास, **संत-कवि कबीर** तथा महात्मा गांधी आदि महापुरूषों के कृतित्व में हमे इसी परम्परा के दर्शन होते हैं। हजारी प्रसाद द्‌विवेदी के शब्दों में," लोकनायक वही हो सकता है, जो समन्वय कर सके। गीता में समन्वय की चेष्टा है, बुध्ददेव समन्वयवादी थे, और तुलसीदास व **कबीर** समन्वयकारी थे। लोक-शासकों के नाम तो भुला दिए जाते हैं, परन्तु लोकनायको के नाम युग-युगान्तर तक स्मरण किए जाते हैं।"

"प्राचीन" हिंदी कवियो की "आधुनिकता" ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर को भी आश्चर्यचकित किया था। काशी में बंग साहित्य सम्मेलन के अध्यक्षीय भाषण में रवीन्द्रनाथ ने कहा था, "मै हिंदी नहीं जानता किन्तु अपने आश्रम के एक बंधु द्वारा हमने प्राचीन हिंदी साहित्य के आश्चर्यजनक रत्नसमुह का कुछ-कुछ परिचय प्राप्त किया है। प्राचीन हिंदी कवियों के ऐसे तमाम गीतों को हमने उनसे सुना है। उनको सुनकर लगता है जैसे वे आधुनिक हैं। इसका मतलब "*काव्य-सत्य चिरकाल आधुनिक है*।" कबीर और तुकाराम जैसे "आधुनिकता का पूर्वाभास" देने वाले कवियों को क्या निरवधि काल और विपुला पृथ्वी से आशा करनी पड़ी कि कभी को समानधर्म उत्पन्न होगा, जो उन्हें सराहेगा, उनके महत्त्व की 'खोज' करेगा; या उनके अपने 'स्तब्ध मनोवृत्ति' वाले- तथाकथित 'मध्यकाल' में ही उन्हें विपुल श्रोता समुदाय और व्यापक सामाजिक सम्मान प्राप्त हुआ? तुकाराम को विवश किया गया कि वे अपना काव्य स्वंय जलार्पित कर दें। कबीर को विवश किया गया कि वे अपनी काशी नगरी छोड़कर चले जाएँ। ऐसा व्यवहार उन्हीं से किया जाता है, जिनके **लोक-प्रभाव** से समाज-सत्ता को डर लगता हो। हिंदी साहित्य में कबीर का व्यक्तित्व अनुपम है।

गोस्वामी तुलसीदास को छोड़ कर इतना महिमामण्डित व्यक्तित्व कबीर के सिवा अन्य कि का नहीं है। अरबी भाषा में कबीर का अर्थ महान होता है। काशी के इस अक्खड़, निडर एव संत कवि का जन्म लहरतारा के पास सन 1398 में ज्येष्ठ पूर्णीमा को हुआ। कबीर की उत्पत्ति के संबंध में अनेक किंवदन्तियाँ हैं। लेकिन 'जगप्रसिध्द' बात तो यह है कि कबीर की माता जुलाहिन थी-"जुलाहा ग्रभे उत्पन्नो। साध कबीर महामुनी " अनन्तदास की कबीर-परिचई का पहला ही पद है:"*कासी बसै जुलाहा एक, हरि भगतन की पकड़ी टेक। बहुत दिन साकत मैं गईया, अब हरि का गुण ले निरबहीया* ।" रामानन्द जी के पावन पद-स्पर्श से कबीर को रामनाम की अनुभुति हुई और तत्क्षण उसी रामनाम को कबीर ने दीक्षा-मन्त्र मान लिया और रामानन्द जी को अपना गुरू स्वीकार कर लिया। कबीर के ही शब्दों में- '*हम कासी में प्रकट भये हैं , रामानन्द चेताये*। '

हिंदी साहित्य जगत के जनक कबीर की रचनाओ के लिखित रूप का प्राचीनतम स्त्रोत **'आदिग्रन्थ'** को माना जाता रहा है, जो 1604 ई. मे संकलित हुआ है। उनकी कुछ प्रमुख कृतियाँ-बीजक, कबीर ग्रथावली और कबीर रचनावली के नाम से प्रचलित है। कबीर की रचनाओ मे अनेक भाषाओं के शब्द मिलते हैं यथा- अरबी, फारसी, भोजपुरी, पंजाबी, बुन्देलखंडी, ब्रज, अवधि, खड़ीबोली आदि.., इसलिए इनको भाषा को 'पचमेल खिचड़ी' या 'सधुक्कड़ी' भाषा कहा जाता हैं। कबीर का कवि-व्यक्तित्व आत्मस्थ और लोकस्थ एक साथ है- क्योंकि उनकी संवेदना कामभावना-रामभावना-समाजभावना की निरन्तरता की संवेदना है। यह निरन्तरता ही वह आकाश है, जिसके मध्य कबीर अनल पक्षी की तरह विचरण करते हैः

कबीर अनल अकासा घर किया, मधि निरन्तर बास।
बसुधा ब्यौम बिगता रहै बिन ठाहर बिसवास।। (ग्रंथावली)

कबीर की कविता कोरा उपदेश नहीं, जबदेस्त भावोन्मेष करती है। भावोन्मेष जीवन की आलोचना का भी, जीवन के पार की कल्पना का भी। भावोन्मेष प्रेम के अत्यन्त निजी क्षणों की अनुभूतियो और स्मृतियों का। उल्लास, कामना, अधिकार, आशंका, ईर्ष्या, मादकता, वेदना, मान, मनुहार, खीझ, विश्वास-अविश्वास..सभी का। अलग-अलग क्रोध का भी, और इन सबसे बननेवाले कोलाज का भी। प्रेमानुभव का कौन-सा पहलू है, जिसका स्वर कबीर की कविता में नही गूँजता। फिर, भावोन्मेष सामने मौजूद जिन्दगी के परे भी झाँकने की हिम्मत का। मौत की आँखों में आँखें डालकर बात करने के साहस का। उन्मेष जीवन के बहुरंगी उत्सव का, और उसके अंत का। देह के होने के रोमांचक मादक अहसास का, और उसकी अनिवार्य नश्वरता का। उन्मेष जमकर बोलने के उत्साह का, और अन्ततः मौन की ओर जानेवाली विवशता का। पाखंड को पांडित्य के दुर्ग से बाहर खींच लाने की ताकत का, अन्याय को हरि-इच्छा बतानेवाली सोच से जिरह करनेवाली प्रखरता का। कबीरदास भारत के भक्ति काव्य परंपरा के महानतम कवियों में से एक थे। भारत में धर्म, भाषा या संस्कृति किसी की भी चर्चा बिना कबीर के अधूरी ही रहेगी। कबीर की वाणी उनके मुखर उपदेश, उनकी साखी,रमैनी,बीजक,बावन-अक्षरी,उलटबासी में देखें जा सकते हैं। गुरू ग्रंथ साहब में उनके 200 पद और 250 साखिया हैं।

कबीर की कविता उच्च कोटि की है, जिस कोटि की उनकी साधना। कबीर के भक्ति मे तन्मयता और काव्यात्मकता का अनुपम संगम हैं। भावना के स्तर पर भक्ति, भक्त और भगवान के बीच भागीदारी है। भागीदारी बराबर के लोगों के बीच होती है। कबीर की भक्ति कुछ ऐसी ही है-इसलिए उन्हें **भक्त-कवि** भी कहा जाता हैं। कबीर की कविता में प्रखर सामाजिकता और नितांत निजी प्रेमानुभूति तेल और पानी की तरह नहीं, जल और बूँद की तरह दिख पड़ती हैं। उनका ज्ञानकोष हिंदू परंपरा और नाथपंथी साधना के साथ-साथ इस्लाम से भी अच्छे-खासे परिचय का प्रमाण देता है। थे वे जुलाहे परिवार के, शिष्य-संवादी माने गए वैष्णव साधक रामान्द के। शाक्तों से कबीर की चिढ़ शाक्त साधना से उनके गहरे परिचय का संकेत करती है। अनन्तदास 'कबीर-परचई (1590 के आस-पास) में स्पष्ट कहते हैं कि कबीर शुरू में शाक्त रहे थे-'*बहुतदिन साकत मैं गइय, अब हरि के गुन लै निरबहिया*'। 'जामें कुटुम समाए' की प्रार्थना करनेवाले गृहस्थ कबीर की कविता में वैराग्य का स्वर भी कम प्रबल नहीं। '*नारी पराई या आपनी*' के बारे में बेहद तीखी बातें करनेवाले कबीर अपने राम के प्रति भक्ति और प्रेम प्रकट करने के पलो में स्वयं नारी बन जाते हैं। उन्हे जितनी बेचैनी 'बाहर'को लेकर होती है, उतनी ही गहरी वेदना 'भीतर'को लेकर। कबीर की काव्य-संवेदना रामभावना, कामभावना और समाजभावना को एक साथ धारण करती है। इन तीनों के सृजनात्मक सह-अस्तित्व को पढ़े बिना, कबीर को पढ़ने के दावे व्यर्थ है। कबीर पढ़े-लिखे नही थे-'*मसि कागद छूवो नहीं, कलम गही नहिं हाथ*'। उन्होंने स्वयं ग्रंथ नहीं लिखे, मुँह से

भाखे और उनके शिष्यो ने उसे लिख लिया। कबीर के नाम से मिले ग्रथो की सख्या भिन्न-भिन्न लेखों के अनुसार भिन्न-भिन्न है। एच.एच.विल्सन के अनुसार कबीर के नाम आठ ग्रंथ हैं। बिशप जी.एच.वेस्टकॉट ने कबीर के 84 ग्रथों की सूची प्रस्तुत की तो रामदास गौड़ ने हिंदुत्व' में 71 पुस्तकें गिनायी है। कबीर की वाणी का संग्रह 'बीजक' के नाम से प्रसिद्ध है। इसके तीन भाग हैं- रमैनी, सबद और साखी यह पंजाबी, राजस्थानी, खड़ी बोली, अवधी, पूरबी, ब्रजभाषा आदि कई भाषाओ की खिचड़ी है। कबीर परमात्मा को मित्र, माता, पिता और पति के रूप में देखते हैं। यही तो मनुष्य के सर्वाधिक निकट रहते हैं। वे कभी कहते हैं- *'हरिमोर पिउ, मैं राम की बहुरिया'* तो *कभी कहते हैं, 'हरि जननी मैं बालक तोरा'*। उस समय हिंदू जनता पर मुस्लिम आतंक का कहर छाया हुआ था। कबीर ने अपने पंथ को इस ढंग सुनियोजित किया जिससे मुस्लिम मत की और झुकी हुई जनता सहज ही इनकी अनुयायी हो गयी। कबीर के मुस्लिम परिवार के लिए यह बिंगूचन और परेशानी की स्थिति थी। दुनियादारी निभाने की बजाय भजन-सत्संग करते फिरते रहनेवाले, सत्ताधारियों को चिढ़ाते रहनेवाले बेटे की माँ को स्वाभाविक रूप से लगता था कि बेटा कुलरीति से भटक गया है, बेराह हो गया है। वह इसका दोष उन "मुंडियों" पर ही रखती थी, जिनके चक्कर में बेटा हाथ से निकल गया, और रोती थी कि इन मुए, घरबिगाडू मुंडियों' का कुछ बिगड़ता भी नहीं हैः

हमरे कुल कउनें राम कहिओ।
जब की माला लई निपूते, तब से सुख न भइओ।।
सुनहु जेठानी, सुनहु देरानी, अचरजु एकु भइओ।।
***सात सूत न मुंडीए खोए, इह मुंडीआ किए न मुइओ।।* (श्री गुरूग्रन्थ साहब)**

बेटा माँ का दर्द समझता था, इसीलिए तो अपनी कविता मे उसने इस दर्द को भी दर्ज किया। लेकिन करता क्या? जो राह उसने चुन ली थी, उस पर चलने के लिए माँ की निगाह मे बेराह होना तो अब उसकी नियति थी

कवि शब्द से नही आवाज से पहचाना जाता है। क्यो बार-बार कहते है, कबीर "सुनो भाई साधो"। किस से कहते हैं? क्या सुनाना चाहते हैं और कैसे? कबीर कहते है "सुनो", क्योंकि शब्द सुना ही पहले जाता है, पढ़ना बाद की बात है। पढ़न-लिखना सीखने के बहुत पहले, जन्म लेते ही हम "सुनना" शुरू कर देते हैं। सुनना हमें राम ने ही दिया है, पढ़ना हमे अर्जित करते हैं। "सुनो" कहते कबीर हमारे उसी मूलभूत, प्राथमिक आत्म को संबोधित कर रहे हैं, जो हमारा सहज आत्म है, जन्म से ही हमारे साथ है, और वह केवल हमारा व्यक्तिबध्द आत्म नहीं, उसके परे जाने वाला मानवीय आत्म भी है। लौकिक भी है और लोकोत्तर भी। कबीर न्यौता देते हैं 'आत्म-सत्ता' के धरातल पर भी, और 'अध्यात्म सत्ता' के धरातल पर भी "सुनो भई साधु"। विद्वान बताते है कि कबीर निरक्षर थे, ठीक ही बताते होगे। यह भी शायद कभी विद्वान लोग बता पाएँ कि कबीर ने संगीत की बाकायदा साक्षरता हासिल की थी, या नहीं, लेकिन यह सही है कि पंद्रहवीं सदी से लेकर आज तक वे गायकों के सर्वाधिक प्रिय कवियों में से एक हैं। कारण यही कि कबीर पढ़ने से बहुत पहले, सुनने और सुनाने के कवि हैं।

कबीर की कविता एक भरे-पूरे इन्सान की कविता है। उनकी वाणी 'सुरझावनिहारी' जरूर है, लेकिन उस तरह नहीं, जैसे उपदेश सुरझावनहारे होते हैं। वह सुरझावनिहारी इस अर्थ में है कि उसी के जरिए कबीर अपनी उलझनों से टकराते हैं, और आपको भी बुलाते हैं। कबीर की कविता *पैगम्बर का इलहाम नहीं, इन्सान की आवाज है*। कवि को धर्मगुरू बनाने पर आमादा लोगों को ये सब अपाच्य अन्तर्विरोध लगते रहे हैं, असल में ये सब बातें कबीर की इन्सानियत की पहचान हैं। वे निस्सन्देह 'पहुँचे हुए फकीर' थे, लेकिन जिस 'घर' तक 'पहुँचे' थे, वहाँ तक पहुँचने के लिए उन्होंने 'लम्बा मारग' तय किया था। उनकी कविता इस

लम्बे मार्ग पर आई चुनौतियों और पड़ावों की अकथ कहानी है। कबीर ने राम की छाया के ही नहीं, घट-भीतर के ही नहीं, 'दुनी दीवानी', के, प्रलोभनों और वैर के अनुभव भी कविता में दर्ज किए हैं। लेकिन चूँकि कबीर को कवि की तरह पढ़ा ही नहीं गया है, इसलिए ऐसे कई अनुभव कोरी अलौकिकता के चश्मे से पढ़ लिये गए हैं। इस बात पर भी ध्यान नहीं दिया गया है कि मुक्तकों के संकलन होने के बावजूद 'आदिग्रन्थ','ग्रन्थावली' और 'बीजक' तीनों में कई रचनाएँ आख्यान और संवाद की रचना करती हैं, उन्हें अलग-अलग पढ़ना कविता के उन लौकिक जीवनानुभवों के मार्मिक साक्ष्य से वंचित होना है, जिन्होंने उसके आध्यात्मिक जीवन को समृध्दतर बनाया। माया के प्रति निर्लिप्तता,'घट-भीतर' के अनुभव की प्रामाणिकता और 'बाहर-संसार' की अनभय आलोचना ने कबीर की लोकप्रियता बहुत बढ़ा दी। वे तो अपने राम पर रीझे थे,और उसी को रिझाना चाहते थे, लोग कबीर पर रीझने लगे। कबीर की लोकप्रियता और उसके कारण कबीर की - बढ़ती चली जा रही थी- इस लोकप्रियता के कारण कबीर के 'सुमिरन' का एकान्त मिलने में बाधा जो पड़ रही थी। रामनाम के साधक कबीर अपने खुद के नाम को तो वैसे ही मिटाने की कोशिश करते रहे, जैसे सुशील स्त्री अपना गर्भ छिपाती है; लेकिन क्या फायदा, जैसे गर्भ दिनोंदिन बढ़ता है, वैसे ही कबीर का नाम बढ़ रहा था -*"कबीरा अपनौं नाँव मिटाइ/ज्यूँ कुलवंती ग्रभ दुराइ/दिन दिन प्रगट होत है सोई/ करनी कैसें छाँनी होई"*।

कबीर की कविता के संग बस अब हम और ये साहित्य जगत हैः

सती पुकारे सलि चढ़ी, सुन रे मीत मसान।
लोग बटाऊ चलि गए, हम तुझ रहे निदान।।

श्मशान मुर्दों का गन्तव्य भी है, और अल्पजीवी वैराग्य का रूपक भी। इस वैराग्य-रूपक में गूँजती है कविता के जीवन-राग की, आश्वासन की, संशयहीन आत्मविश्वास की आवाज; जलती चिताओं की गन्ध के बीच हवा को साँस लेने लायक बनाती हुई, व्यापती है कबीर-वाणी की कस्तूरी-गन्धः

पिंजरि प्रेम प्रकास्या, जाग्या जोग अनन्त।
संसा छूटा सुख भया, मिल्या प्यारा कन्त।।
पिंजरि प्रेम प्रकास्या, अन्तरि भया उजास।
मुख कस्तूरी महमही, वाणी फूटी बास।।

(परचा कौ अंग)

तात्पर्य-कबीर को ढूँढ़ना वैसे ही लगता है, जैसे ब्रह्माण्ड में व्याप्त परब्रह्म परमात्मा को खोज़ना। शायद कबीर हिंदी साहित्य के नरदेहधारी नारायण-स्वरूप काव्य-सम्राट हों।

****

संतरा नगरी नागपुर (ऑरेंज सिटी नागपुर)

शांता उन्नीकृषणन - वरीष्ठ हिंदी अनुवादक

जैसे जयपुर शहर " पिंक सिटी " के नाम से जाना जाता है वैसे ही नागपुर शहर "संतरा नगरी" के नाम से जाना जाता है । यहाँ सतरे की पैदावार होती है और देश - विदेश मे यहां से सतरो का नियोत किया जाता है । यह भारत देश के मध्य भाग मे स्थित है "जीरो माइल स्टोन" इसी शहर मे स्थित है । देश के मध्य मे होने से यह रेल, हवाई जहाज और स्थल मार्ग सेवाओं से जुड़ी है । नागपुर शहर पहले मध्यप्रदेश की राजधानी हुआ करती थी लेकिन अब यह शहर महाराष्ट्र की उपराजधानी है । इसकी सीमाएँ दक्षिण मे आध्रप्रदेश, पूर्व मे छत्तीसगढ़, उत्तर मे मध्यप्रदेश और पश्चिम मे मरठवाडा एव खानदेश से मिलती है ।

प्राय: देखा गया है कि नागपुर अनुशासन एव शाती प्रिय शहर है । शिक्षा के क्षेत्र मे यह काफी विकासशील है कइ शैक्षणिक स एँ और केन्द्रीय सरकारी कार्यालय इस शहर मे स्थित हैं । पर्यावरण के दृष्टिकोण से अन्य शहरो की अपेक्षा यहां प्रदूषण कम है । इस कार्य मे राष्ट्रीय पर्यावरण अभियांत्रिकी सस्थान, नागपुर अपनी सेवाये उपलब्ध कराता है । वर्ष 2013 मे नागपुर शहर को स्वच्छ एव हरियाली शहर का प्रथम पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है ।

नागपुर शहर का इतिहास काफी पुराना है । नागपुर मराठो के भोसला राजवश क राजधानी थी जिन्होने अठारहवी सदी के मध्य मे एक स्वतत्र हिदू रियासत बनाइ, जो पूर्वी मध्य भारत के अधिकाश क्षेत्र मे समाहित है । वर्ष (1818) मे तीसरी एग्लो मराठा युद्ध मे उनकी हार के पश्चात, भोसला उपनिवेश नागपुर सभाग मे होकर रह गया । वर्ष 1853 मे नागपुर के अतिम महाराजा का निधन बिना वारिस के हो गया बाद मे नागपुर सभाग को ब्रिटीश के मुख्यधारा (अनुवर्ती) मे शामिल किया गया । वर्ष 1861 मे नागपुर शहर ब्रिटीश राज का एक भाग के रूप मे मध्य प्रात (सेट्रल प्राविस) बन गया ।

नागपुर शहर की मुख्य सरचना का स्वरूप वर्ष 1818 मे बनाइ गइ ब्रिटीश किला है जो शहर के मध्य भाग मे सीताबडी के जुडवा पहाड़ पर स्थित है । नागपुर शहर, भारतीय प्रायव्दीप के दक्कन पठार पर स्थित है और यह सतपुडा रेज के पठारो से घिरा हुआ है । नागपुर शहर की कुल भूमि क्षेत्रफल 228 वर्ग कि.मी. है जबकि जिले का क्षेत्रफल 9892 वर्ग कि.मी. है । वर्ष 2011 के जनगणना रिपोर्ट के अनुसार नागपुर शहर की कुल आबा 46,53,171 है । मुख्यत: नागपुर महाराष्ट्र राज्य की शीतकालीन राजधानी भी है ।

यह शहर अपने आप मे अनोखा है यहाँ हर भाषा, धर्म एव जाति के लोग रहते है । धर्म, जाति के नाम की लड़ाइ से यह शहर कोसो दूर है । सभी एक साथ मिलकर रहते है और एक दूसरे के त्यौहारो का आनद उठाते है । यहा की स्थानीय भाषा मराठी होने पर भी अधिकत्तर लोग हिंदी बोलते है इससे किसी प्रकार की कठिनाइ नही होती है और यह एक गौरव की बात है । नागपुर शहर के वासी काफी मिलनसार एव सुख - दुख मे एक दुसरे का साथ देते है ।

नागपुर शहर की सामान्य जलवायु मानसून के मौसम को छोड़कर वर्ष भर एक बहुत शुष्क और अर्ध उमस भरे मौसम का अनुभव होता है । नागपुर की जलवायु गर्मियो मे अत्यधिक गर्म मौसम का साक्षी है जो मइ के महीने मे अपनी शिखर तक पहुँच जाता है । माह दिसबर, जनवरी तथा फरवरी शीत ऋतु के अतर्गत आते है यहाँ शुष्क और शीत मौसम, शीत ऋतु की विशेषता है ।

शहर मे दर्शनीय स्थल काफी सीमित है जैसे सेमिनरी हिल्स, अबाझरी उद्यान, तेलंखेडी लेक, महाराज बाग, सी;वी.रमन प्लेटिनियम हॉल, ड्रेगन पॅलेस दीक्षा भूमि, टेकड़ी गणेश मंदिर तथा कइ मंदिर, चर्च, गुरूव्दारे है । लेकिन नागपुर शहर के आस-पास कइ पर्यटन स्थल है जैसे रामटेक जो कि ऐतिहासिक , नवेगांव बांध, सेवाग्राम, तोतलाडोह, पवनार आश्रम, नागझीरा, अंबोरा, आदासा, ताडोबा और कोराडी देवी आदि । शीत ऋतु मे अधिकाश लोग इन दर्शनीय स्थलो का भ्रमण करते है और आनद उठाते है ।

``

****

जीतने वाले अलग चीजें नहीं करते, वो चीजों को अलग तरह से करते हैं ।

- शिव खेरा

मित्रता

डी.पी.सांधोकर, स.मौ.वि. - ।।

दोस्ती करो तो धोखा मत देना ।
दोस्ती को आँसू का तोहफा मत देना ।
दिल से रोये कोइ तुम्हे याद कर ।
ऐसा किसी को मौका मत देना ।
दोस्ती तो सिर्फ इत्तफाक है ।
ये तो दिलों की मुलाकात है ।
दोस्ती नहीं देखती ये दिन है कि रात है ।
इस में तो सिर्फ विश्वास और जज़बात है ।
दर्द काफी है जिंदगी को सताने के लिए ।
दोस्त जरूरी है जिन्दगी को बिताने के लिए ।
कौन करता है कुछ किसी के लिए ।
हम तो जिंदा है, सिर्फ आप जैसे दोस्तो के लिए ।
इसलिए दोस्तो, दोस्ती को रंग नहीं होती,
फिर भी दोस्ती रंगीन है , दोस्ती को चेहरा नहो,
फिर भी दोस्ती सुंदर है, दोस्ती को घर नहीं,
इसलिए वह हमारे - तुम्हारे हृदय में है ।

****

शिखर तक पहुँचने के लिए ताकत चाहिए होती है, चाहे वो माउन्ट एवरेस्ट का शिखर हो या आपके पेशे का ।

-ए.पी.जे.अब्दुल कलाम

मेरी बेटी

डी.एस.गायकवाड, स.मौ.वि. - ।।

ना चाहूं मै धन दौलत,ना चाहूँ सोना-चादी
चाहूं बस तेरी किलकारी,चाहूं बस तेरी हसी।
बन बगान की तूम खिलाखिलाती हो कालियां
ठूमक-ठूमक कर मेरे घर आना,खनकाना पैजानियां।
शंकरजी की तुम हो उमा,रामजी की हो सीता
आहट सुने बगर तेरी,बेटी बता मै कैसे जीता।
शक्ति हो ब्रहमाड की तुम, साधको की उपासना तुम
व्रत-उपवासो का फल भी तुम, तु मेरा जीवन सरगम।
सूरो बीन सगीत नही भाव बिना न भक्ति
नारी बिन नर नही,बेटी तुम बिन न मुक्ति!
मै क्या तुम्हे शिक्षा दूं? तू स्वय शिक्षा की देवी
संसार की तुम धरा हो,मेरे मन की मनोहर छवी।
तुम वृध्दी हो-तुम सिध्दी हो-तुम शांती हो-तुम हो क्राती
तेरे गुणो की गहराइ अभागी जनता न जानती।
कहते है बेटे से कुल बनता, **वंश पनपता बेटी से**
इश्वर का अनमोल,कोमल सुमन सम्हालो मातृ-हृदय से।
पृथ्वी स्वय नारी रूप है जिस पर आप लेते सास
बेटी का जीवन अधिकार हैं, ना बनो उसके गले का फांस।
पग से व्यग सुधा चद्रन थिरकती वीणा-झंकारसी
नारी की ये शक्ती क्या लीला नही भगवान की।
अतरिक्ष सम्राज्ञी **'कल्पना चावला'**थी एक साहसी बेटी
क्या कहने को काफी नही, बेटी ही है असली घी की रोटी।
घाव अभी ताजा है **'मेरीकोम'** के मुक्के का
निसदेह प्रायश्चित करे,कन्या भृण-हत्या का।
ना चाहूँ मैं धन दौलत,ना चाहूँ सोना-चांदी
चाहूँ बस तेरी किलकारी , चाहूँ बस तेरी हंसी।

****

हिमानी

ए.वी.गोडे, स.मौ.वि. - ।

विभिन्न सस्कृतियो को अपने अदर समेटे हुये है - भारत देश । विविधता मे एकता इसकी विशेष पहचान है । यहाँ हर पचास मील पर भाषा, खान-पान, रीतीरिवाज, परंपरा, रहन-सहन, पहनावा और सस्कृति मे अतर महसूस किया जा सकता है । कइ जाति-उपजाति और धर्मो को मानने वाले लोग सदियो से यहा निवास करते आये है और रहेगे । इसी प्रकार यह नैसर्गिक प्रकार मे भी विविधता वाला देश है । दक्षिण-पूर्व और दक्षिण-पश्चिम मे विशाल समुद्र इसकी शोभा बढ़ाते है । पूरा भू-प्रदेश कइ सारी विविधताओ से ओतप्रोत है। घने जंगल, रेगिस्तान, पर्वत-मालाये यहाँ का सौदर्य बढ़ाते है। दर्रे, खाइया और उत्तुग शिखर रोमाच भर देते है । दुनिया का सबसे जवान हिमालय पर्वत भारत माता के उत्तर दिशा मे कइ सदियो से बिना किसी थकान से एक निस्वार्थ पहरेदार का कर्तव्य निभा रहा है । यह उत्तर ध्रुविय सर्द हवाओं से यहाँ के जन - जीवन की रक्षा करता है तो कभी मानसुनी बादलो को अपने पैरो पर खाली होने पर विवश कराता है । सदियो से यह अपनी निरतर सेवाये बिना आह के भारत माता की चरणो मे अर्पण कर रहा है । इसकी गोद से कइ हिमनदीयो का उगम हुआ है । इन्हे हिमानी या हिमखड भी कहा जाता है । ये हिमानी सदियो से मानव तथा सैलानियो के आकर्षण का केन्द्र बनी हुयी है । हिम से ढ़की हिमालय पर्वत - माला श्वेत वस्त्र धारण कर ना सिर्फ देश की हिफाजत करती आ रही है साथ ही सारी दुनिया को शाती का सदेश भी देती आ रही है ।

कई बार यहाँ दिन का नजारा भी बेहद रोमांचित कर देने वाला होता है । सुरज की लालिमा लिये किरणे जब हिमखडो पर पड़ती है तो ऐसा लगता है मानो दिन मे भी रात का नजारा धरती पर अवतीर्ण हो गया हो । बर्फ की सफेद चादरो से परावर्तित होती किरणे चाँद की चाँदनीयो सा आभास कराती है । सारा हिमालय इस चाँदनी की चमक से भर जाता है । एक विशालकाय बादल की तरह दिखाइ पड़ने वाला यह नजारा मौसम विज्ञानियो को आकर्षित किये बगैर नही रह सकता । अकसर ऐसे हिम-बादलो की चादरे बहुतायत से ऊँचे आसमान मे दिखाइ देती रहती है। प्राकृतिक हिमानी या हिमनदियो का परिसर भारत मे जम्मु-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश , उत्तराखड और सिक्कीम मे विद्यमान है । ज्ञात स्त्रोतो से पता चलता है कि हिमाचल प्रदेश मे इनकी सख्या अधिकतम और सिक्कीम मे न्युनतम है । पृथ्वी के दोनो ध्रुवो के पश्चात सियाचिन हिमानी दुनिया का दुसरा बड़ा हिमानी है और

सामरिक दृष्टि से देश के लिये अति सवेदनशील और महत्वपूर्ण भी है । शायद इसके सामरिक महत्व की वजह से ही यह क्षेत्र हमेशा से चीन और पाकिस्तान के साथ भारत का विवादित मुद्दा बना हुआ है । गंगोत्री और यमुनोत्री हिमनदिया हिन्दुओ मे पवित्र माने जाने वाली गगा और यमुना नदियो का उगः -स्थान है । सभी हिन्दु पथिय भारतीयो के दिलो मे इनका पवित्र श्रद्धास्थान है । इसमे भी गगा नदी के जल का एक विशेष महत्व है । इसके जल मे कभी-भी कोइ हानिकारक जीव-जतु पनप नही पाते है जो अन्य जः -स्त्रोतो के पानी मे कुछ समय पश्चात पनपने लगते है ।

सभी नदिया भारतियो के लिये जीवन-धारा का स्त्रोत है। नदियो के किनारे ही कइ सभ्यताये और सस्कृतियो ने जन्म लिया वे फले-फुले और विकसित भी हुए। भारती सस्कृतियो को दुनिया की सबसे प्राचीनतम सस्कृतियो मे गिना जाता है। गगा नदी को तो उत्तर तथा पुर्वोत्तर राज्यो की जननी कहा जाता है। नदियो की बहुतायत मे उपलब्धता के कारण भारत को नदियो का देश भी कहा जाता है।गगा नदी का भारतीयो के मन मे एक देवी का स्थान है। इसका उल्लेख रामाय , महाभारत और अन्य उपग्रथो मे भी पाया जाता है। जैसे की पहले भी विदित हुआ है, गगा नदी उत्तर-पुर्व प्रातो के लिये एक जीवन-प्रवाह है और इस भूभाग मे रहनेवाले भारतीयो के लिये एक सजीवनी का काम करती है। यह उन जीवन आगे बढ़ाने और समृद्ध करने का निस्वार्थ कार्य लगातार करती आ रही है। इसके किनारे कइ शहर विकसित हुये है। कृषि से लेकर कुटिर, लघु, मध्यम और भारी उद्यो स्थापित किये गये है। इन उद्योगो के लिये गगा नदी आवश्यक सामग्री का एक प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष स्त्रोत है। इसके द्वारा बनाये गये नहरो से जहाज परिवहन सेवाये भी चलाइ जा रही है। सभी हिमनदियो का कितना भारी योगदान भारतीयो के दैनिक जीवनयापन के लिये है यह इसका प्रमाण है। हिमनदियो की विशेषता यह होती है कि इनमे सालभर जल-प्रवाह बना रहता है। बरसात मे मानसून की वर्षा से तो ग्रीष्म काल मे बर्फ के पिघलने से। इससे बारह माह सिचाइ का कार्य निरतर रुप से चलाया जा सकता है। सिचाइ से जुडी खेती ग्रामिण तथा शहरी अर्थव्यवस्था का मुख्य आधार है।जनसख्या विस्फोट, औद्योगिकरण और जगल कटाइ के कारण हर क्षेत्रो के जलवायु मे काफी परिवर्तन आ रहा है। जिसका सीधा असर मौसमी हवाओ के चक्र पर पड़ रहा है। पृथ्वी का कोइ क्षेत्र अछुता नही बचा है जिसके जलवायु मे कोइ परिवर्तन नही आया हो। आज यह एक ज्वलत समस्या है और वह दिन-ब-दिन अधिक गहरी होती जा रही है। वजह यही है कि आजकल जलवायु परिवर्तन पर राष्ट्रीय तथा अंतर राष्ट्रीय सम्मेलनो का दौर भी शुरु हो चुका है। इन सम्मेलनो का निचोड़

बताता है कि शहरी औद्योगिकरण, जनसख्या विस्फोट और वनक्षेत्रो का घटता अनुपात ही इसका प्रमुख कारण है। ढ़ती हुयी आबादी के लिये जीवनावश्यक वस्तुओ जैसे अ , सब्जिया, दवा-दारु, वस्त्र और बिजली आदि की कमी को पुरा करने के लिये मा द्वारा किया जाने वाला औद्योगिक और प्राकृतिक दोहन भी कारक है। इन प्रक्रियाओ मे कारण स्वरुप वातावरण मे विपुल मात्रा मे कार्बन-डाय-आक्साइड, कार्बन-मोनो-आक्साइड और कार्बन-सल्फाइड का प्रमाण बढ़ते जा रहा है। एक युनिट बिजली पैदा करने के लिये एक किलो कार्बन-डाय-आक्साइड का उत्सर्जन होता है। इन वायुओ की लगातार बढ़ती मात्रा के कारण सूर्य से आने वाला विकिरण और पृथ्वी से लौटनेवाले विकिरणो मे जो पुर्वापार से सतुलन था वह बिगड़ते जा रहा है। पृथ्वी का औसतन तापमान ग्रीन-हाऊस परिणाम के कारण पिछले तीस सालो मे लगभग आधे से एक डिग्री सेल्सियस तक बढ़ चुका है। बढ़ते हुये जलवायु सकट के कारण मौसम चक्र मे आमुलाग्र परिवर्तन दिखाइ देने लगे है। उदाहरण के तौर पर देखा जाये तो एक ही समय पर कही भारी से अति-भारी वर्षा होती है तो दुसरी ओर सूखा पड़ता है। निरंतर सामान्य से कम वर्षा की वजह से सूखे का हमे सामना करना पड़ रहा है। यही वे कारक है जिनकी वजह से आधुनिक एव उन्नत किस्म के बिज-बियाने और रासायनिक खतो का इस्तमाल करने के बावजुद कृषि उपज लगातार गिरावट आती जा रही है। वजह देश के कइ क्षेत्रो मे किसान आत्महत्या पर उतारु हो जाते है। यह भी एक समस्या इसकी देन है। इसका सीधा सम्बन्ध ग्रामीण अर्थव्यवस्था के उपर पड़ता है और यह तहस नहस होने के कगार पर पहुँच गई है।

परिणामस्वरुप ग्रामीण जनसख्या का प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव शहरी अर्थव्यवस्था पर हो रहा है। यदि इसे ऐसे ही नजर अदाज करते रहे तो शहरी और ग्रामीण अर्थव्यवस्था मे आपसी तालमेल की कमी होकर इनका सतुलन बिगड़े बगैर नही रह सकेगा। देश की मिश्रित अर्थव्यवस्था इससे प्रभावित होकर ढ़ह जायेगी। देश की अर्थव्यवस्था सुचारु-रुप से चलने के लिये ग्रामीण तथा शहरी अर्थव्यवस्था मे तालमेल तभी सभव होगा जब नैसर्गिक ससाधनं का दोहन सीमित मात्रा मे हो। साथ ही जलवायु मे अवांछित परिवर्तन ना हो और मौसमी परिवर्तनो पर भी कोइ आच ना आये। जलवायु परिवर्तन सीमित मात्रा के दायरे मे रखने के लिये वैज्ञानिक तौर तरीको का अधिक से अधिक कड़ाई से पालन करना होगा। जैसे, पॅसिव कुलिंग तकनिक का प्रयोग कर पॅसिव भवनो का निर्माण करके हम वातावरण मे चार से पाँच डिग्री तापमान की कमी निश्चित ही कर सकते है। इससे बिजली की खपत मे भी कमी लाइ जा सकती है। परमाणु तथा जल-विद्युत सयत्रो का प्रयोग करके देश के लिये आवश्यक

बिजली का प्रबन्ध किया जा सकता है। पारपारिक बिजली निर्माण करते समय पर्यावरण को नुकसान पहुचाकर तापमान मे अधिक बढ़ोत्तरी करनेवाले वायुओ के उत्सर्जन मे इससे कमी लायी जा सकती है। जलवायु परिवर्तन के कारण मौसम चक्र मे भी परिवर्तन आते है मौसमी प्राचलो के कारण हिमानी अपक्षरण होता है जो आज ज्वलत समस्या बन चुकी है। हिमानी अपक्षरण मे बर्फ की राशी नष्ट होती है। मौसमी प्राचलो का ही यह असर होता है। जैसे बढ़ा हुआ तापमान व हवा की गति के कारण हिमानी की सतह पिघलती बाष्पिकरण और हवा अपरदन भी इसमे योगदान करते है। अगर हम इसके प्रति जागरुव और जवाब देही नही बनते है तो वह दिन दूर नही जब पृथ्वी का औसत तापमान इतना बढ़ चुका होगा कि इसके परिणामस्वरुप हिमानी क्षेत्र मे स्थित बर्फ का पिघलना शुरु हो जायेगा। शायद पृथ्वी का यह हिस्सा एक विशालकाय महासागर मे तबदील हो जायेगा। इससे ग्रीष्मकाल मे भी काफी सारी नदियो मे बाढ़ आ जायेगी। हम मानसुनी वर्षा से कभी-कभार आने वाली बाढ़ का सामना सही ढ़ंग से कर नही पाते तो ग्रीष्मकाल मे आनेवाली बाढ़ का मुकाबला कैसे कर पायेगे? बाढ़ के लिये पानी का स्त्रोत हिमानीयो से अनगिनत बन जायेगा जो आज मौजुदा परिस्थितियो मे केवल 25 से 30 प्रतिशत है। अगर जलवायु परिवर्तन इसी रफ्तार से होता रहा तो समुद्र अपनी सीमाये लाघे बगैर नही रह पायेगा। ऐसी परिस्थितियो मे तो समुचा देश ही जलमग्न हो जायेगा । यह वैश्विक सच है कि नैसर्गिक आपदाओ को हम रोक नही सकते। हां, यह जरुर कर सकते है कि आपदाओ के पुर्वानुभवो के आधार पर उनका वैज्ञानिक अध्ययन व विश्लेषण कर पुर्वानुमान की नीव रख सकते है। लोगो मे उनके प्रति जागरुकता पैदा कर बचावात्मक उपाय कर सकते है। इससे हम इन आपदाअ मानव जाति, जीव-जंतु, पशु-पक्षी तथा प्राकृतिक व मानव निर्मित ससाधनो की हिफाजत कर पायेगे। इसके विपरित हम जलवायु मे परिवर्तन लाने के लिये पोषक कार्य करके मौसम तथा अन्य नैसर्गिक आपदाओ की तीव्रता बढ़ा रहे है। उन्हे बार-बार आने के लिये न्योता देते जा रहे है।

सृष्टी ने बनाया है धरा की रचना स्वर्गमयी
संजोया उसने है सभी को बन खुद ममतामयी,
कुछ तो रहम कर हे मानव, चेत जा,
मत बरबाद कर हिमानी, खुद की जीवन सजीवनी।

रोजमर्रा की दिनचर्या पूरी करते हुये मानव जीवन नीरस ना बन जाये इसलिये कुदरत के कई अनगिनत तथा अद्भुत नजारे इस धरा पर नैसर्गिक धरोहर के रुप मे विद्यमान है जो मानव तथा सारे जीवन को निरसता से बचाते है। इसी का रुप धरे भिन्न पशु-पक्षी, जीव-जंतु, पेड़-पौधे व फल-फुलो से लदी डालिया है तो कही पर्वतमालाये, गहरी खाइया, इन्हे चीरकर निकलती नदिया, झील-झरने, घने जंगल, पहाड़ी सरोवर विद्यमान हुये है। साथ ही यहा के बदलते ऋतु मनमस्तिष्क को उद्वेलित करे बगैर नही रहते तथा मानव जीवन को उमग से भर देते है। मानव जीवन इससे आवश्यक प्रेरणा पाकर अपना आगे का ज सुचारु करने के प्रयास मे फिर से लग जाता है। चक्र ऐसे ही चलते रहता

इसमे कोई अतिशयोक्ति नही हो सकती है कि हमारी धरा अपने-आप मे प्राकृतिक सौदर्य से परिपूर्ण है। मानव ने भी अपनी बुद्धि और शक्ति का उपयोग करके प्राकृतिक सौदर्य को और अधिक बढ़ाने मे कोई कोर-कसर नही छोड़ी है। मानव ने अपने अ कौशल्य का परिचय देते हुये धरती पर कई असाधारण चीजो का निर्माण किया है दुनिया के सात आश्चर्य जिसमे आगरे का ताजमहल, मिस्त्र के पिरॅमिड व चीन की दीवार आदि का समावेश होता है। कि -मकबरे, मिनारे, विशाल भवन, गुफाये, बाग-बगीचे, तालाब, नहरे, झरनो तथा टेढ़ी-मेढ़ी सडके और वस्तु तथा प्राणी सग्रहालय, अभयारण्य आदि का निर्माण मानव ने किया है और इससे धरती को अधिकाधिक सौदर्यमान किया है। क्या मानव आ अपनी भौतिक सुख-लोलुपता मे इतना विवश हो चुका है कि उन्हे पूरा करने के लिये अपने हाथो सजायी और मडित की गयी इस धरती को जलमग्न होते हुये देखता रह जाये ? प्राकृतिक सौदर्य और मानव-निर्मित रचनाये जो मनुष्य के लिये अद्भुत है, क्या अपनी अत्याग्रहता मे वह इन्हे नष्ट कर देगा? अगर ऐसा हुआ तो यह उस प्रकाशमय तारे की कहानी जैसा होगा । एक प्रकाशमय तारा आसमान मे चमकते-चमकते ब्लॅक होल मे विलिन हो जाता है। शायद ऐसे ही पृथ्वी पर राज करनेवाला मनुष्य एक दिन जलमय ब्लॅक होल मे लुप्त हो जायेगा, फिर इतिहास बन जायेगा। तब तो यकिनन इस इतिहास की खबर रखने वाला भी शायद इस धरातल पर कोई नही होगा।

हर कोई करता है चर्चा अब इसकी दबी जुबानी
मानव और प्रकृति की बरकरार रही है ये अमर कहानी,
देश-दुनिया के लिये जो सदा से ही रही है लुभावनी
कुदरत का है अद्भुत नज़ारा, खो मत देना इन्हे, ये है हिमानी........

****

अल्पावधि मौसम पूर्वानुमान की कार्यपध्दति

-डॉ.पी.के.नंदनकर,वैज्ञानिक-'एफ'

मौसम निरंतर अपने अंदाज में होता है। दो भिन्न-भिन्न दिनो में मौसम भी एक जैसा नही रहता है। कभी-कभी थोडे समय के अवधि में मौसम में बहुत बडा परिवर्तन हो जाता है। जबा हम कहते है कि मौसम बदल गया है तो हमारा अभिप्राय यही होता है कि तापमान में परिवर्तन हो गया है। पिछले दिनों की अपेक्षा या तो गर्मी अधिक बढ गई है या ठंडक! मौसम में परिवर्तन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग हमारी इंद्रियों के लिए सर्वथा अज्ञेय रहता है, वह है वायु दाब। मौसम के तत्व मुख्यत: ताप, वायुमंडल का दाब, वायु और आर्द्रता है। इन किसी भी एक तत्व में परिवर्तन होने से मौसम बदल जाता है।

मौसम कि भविष्यवाणी एक भाग्यवक्ता द्वारा की गइ भविष्योक्ति जैसी नही होती। यदी हम वायु कि दिशा ,बादलो की किस्म ,ताप इ. तत्वों में से एकाधिक से संबंध परिवर्तनों का दीर्घ अवधि तक निरिक्षण करते रहने पर मौसम की दशाओं की पूर्वोक्ति कर सकते हैं। संसार के लगभग प्रत्येक देश में मौसम विज्ञान ं विभाग है और यही विभाग मौसम संबधी पूर्वानुमान प्रस्तूत करने के लिए उत्तरदायी होता है।

मौसम पूर्वानुमान करना बिल्कुल अनुमानाश्रित कार्य नही है कितु यह मौसम के चार्टों के ठिक-ठिक विश्लेषण करने पर निर्भर करता है। अत्याधुनिक उपकरणों के सहारे मौसम का अब त्रिनियामर्कीय(three di-mensional) आधार पर विश्लेषण करना आसान हो गया है। सर्वाधिक महत्वपूर्ण बाते जिन पर भविष्यवाणी आधारित रहती है, निम्नलिखित है-

1.वायु-राशि सिमाओं को ठिक-ठिक अंकित करना।

2.वायु-राशि तथा उनकी अनुक्रियाओं को ठिक-ठिक समझना।

3.और यदि चक्रवात और प्रतिचक्रवात हो तो उनकी स्थितियॉ तथा उनकी हलचले देखना।

मौसम पूर्वानुमान को मुख्यत: दो वर्गों में बाटा जा सकता है। पहला मौसम के प्रेक्षणों पर आधारित होता है इसे सिनॉप्टिक मौसम पूर्वानुमान कहते है। दूसरा सांख्यिकी मॉडलों पर आधारित होता है। इसे सांख्यिकीय मौसम प्रागुक्ति कहते है। अल्पावधी मौसम पूर्वानुमान मुख्यत: मौसम के प्रेक्षणों पर आधारित रहते हुए उनको ठिक से अंकित कर के तात्कालिक परिस्थितियों को समझते हुए उन परिस्थितियो में पिछले समय के तुलना में आए हुए बदलाव का अध्यन पर निर्भर है। उष्णकटिबंध क्षेत्र मे मौसम की भविष्यवाणी करना Extratropical क्षेत्र की तूलना में काफी कठिन है। उष्णकटिबंध क्षेत्र मे वायु में अचानक बदलाव छ: घंटे में हो सकता है। उष्णकटिबंध क्षेत्र विषुवृत्त के पास होने से कोरियॉलीस बल काफी कम होता है इसलिए उष्णकटिबंध क्षेत्र में मौसम के मिजाज में अचानक बदलाव आता है।

अल्पावधी पूर्वानुमानो के लिए विश्लेषित मौसम चार्ट, समकालीन प्रेक्षण के बाद कम से कम समय में उपलब्ध हो जाए। पूर्वानुमान तैयार करने में लाभकारी कुछ नियमावली नीचे उदघृत की गइ है। तथापी प्रणालियों की स्थिति, तीव्रता, गति और संभावित परिवर्तन के बारे मे शिघ्र निर्णय लेने के लिए मौसम विशेषज्ञ का अनुभव और पूर्वाभ्यास अत्यावश्यक तत्व है।

क) उच्च तथा निम्न दा , कटक और द्रोणिका की स्थिति और तिव्रता समकालीन नकाशे पर निश्चित करना । उच्च अक्षांशो में वाताग्रो की स्थिति निर्धारण करना भी काफी महत्वपूर्ण हैं ।

ख) वायु राशियां निर्धारित करना । उष्णकटिबंधों मे सुस्पष्ट वायु राशियां बहुत कम मिलती हैं । फिर भी उपरी वायुमंड्लीय स्थिरता , नमी की अवस्था , आरोही और अवरोही गती शीतलन तथा ऊष्मन का अध्ययन करने से सटीक मौसम भविष्यवाणी करने में अत्यंत उपयोगी है ।

ग) त्वरण की विधी से निश्चित अवधि के बाद प्रणालियों की स्थिति आकलित करना । प्रणालियों की संरचना और पिछली प्रवृत्ति के आधार पर तिव्रता का अनुमान लगा लेना भी सरल कार्य है । परंतु उष्णकटिबंधी क्षेत्रों में दाब प्रणालियों की गती बहुत अनियत पाइ जाती है , जिससे बहिर्वेशन विधी प्राय: असफल हो जाती है ।

घ) स्थानिय प्रभावों,जैसे -पर्वत,जलाशय,जल,थल समीर पर अलग से विचार करना आवश्यक हैं।

स्थानिय प्रभावो पर आधारीत भारत देश का मध्य भाग के लिए मौसम पूर्वानुमान सटिक होने के लिए कुछ तत्व अनुभव के आधार पर निम्नलिखित परिस्थितीयों का अध्यन कर सकते हैं।

1. **<u>गरज के साथ बारिश</u>** :- भुमध्य रेखा के आसपास के क्षेत्र सूर्य के किरणों से अत्याधिक गर्म हो जाती है । ऐसी स्थिति में अगर ऊपरी वायुमंडल की सबसे निचले स्तर पर अगर भारत के पश्चिम किनार पट्टी पर वायु 15-20 नॉट की गती से दक्षिण - पश्चिम दिशा से आ रही है तो मध्य भारत में कुछ स्थानों (पश्चिम मध्य प्रदेश और पश्चिम विदर्भ) पर गरज के साथ बारीश की सटीक भविष्यवाणी कर सकते हैं । उसी तरह अगर भारत के पूर्व पश्चिम किनार पट्टी पर वायु 15-20 नॉट की गती से दक्षिण - पूर्व दिशा से आ रही है या lower Tropospheric level पर प्रतिचक्रवात है तो भी मध्य भारत में कुछ स्थानों पर (छत्तीसगढ और पूर्व विदर्भ) पर गरज के साथ बारीश की सटीक भविष्यवाणी कर सकते हैं । इसके विपरीत अगर कम गती की वायु दक्षिण की ओर से आ रही तो तापमान में बढोत्तरी होने के संकेत मिलते हैं । यह संकेत मध्य भारत में Heat Wave की सटीक भविष्यवाणी करने में काफी उपयुक्त हैं ।

2.**<u>पूर्वी तरंगेः-</u>** मध्य प्रशांत महासागर की व्यापारी हवाओं और विषुववृत्त रेखीय पूर्वी वायु प्रवाह में एक और प्रकार का विक्षोभ प्रायः गर्मियों मे तरंग द्रोणिका के आकार मे जनित होता हैं। यह तरंग पूर्वी वायु प्रवाह मे पश्चिम की ओर लगभग 600 कि.मी. प्रतिदिन के वेग से चलती है। बंगाल की खाडी में lower tropo-spheric level पर यदी ऐसी स्थिति पाइ जाती है तो मध्य भारत में बारिश के बारे मे प्रतिदिन के वेग के हिसाब से द्रोणिका रेखा के ठीक पीछे गर्जन मेघ और बौछार की सटीक भविष्यवाणी कर सकते है।

3.**<u>वेट बल्ब पोटेंशिअल तापमानः</u>**- मध्य भारत में अगर वेट बल्ब पोटेंशिअल तापमान 22°सें. या उससे अधिक रहता है तो भी हम उस क्षेत्र मे गर्जन मेघ की सटीक भविष्यवाणी कर सकते है।

4.**<u>पश्चिमी विक्षोभः</u>**- विशेष कर नवंबर से मइ के महिनो में मेडिटिरेनियन और कॅस्पियन साग प्रजनित होकर कम दाब के क्षेत्र भारत में पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर अग्रसर होते है। ये एक के बाद एक क्रमबध्द तरिके से बढते हुए उत्तर ,मध्य और पूर्वोत्तर भारत के मौसम को काफी प्रभावित करते हैं। उपरी वायुमंडल के मानचित्र पर यदी द्रोणिका मध्य भारत तक पहुचने के संकेत मिलते है तो मध्य भारत के कुछ क्षेत्र(मध्य प्रदेश और विदर्भ) मे वर्षा होने की सटीक भविष्यवाणी कर [illegible] काफी बदलाव या शितलहर की भविष्यवाणी करने मे सहायता मिलती है।

[illegible]तौर पर उपर दिए गए तत्वो के आधार पर [illegible] सटीक भविष्यवाणी कर सकते [illegible],साथ ही सांख्यिकीय पूर्वानुमान, रडार और उपग्रह चित्रों के माध्यम से सटीक पूर्वानुमान की पुष्टी करके मौसम विशेषज्ञ अपना आत्मविश्वास बढाते हुए शत-प्रतिशत सटीक पूर्वानुमान कर सकते हैं।

****

प्रादेशिक मौसम केन्द्र नागपुर का - शहर के समग्र विकास में योगदान

- एस.के.कोंगे, स.मौ.वि. - ।।

□□□□ वष क मध्य म ास्थत सत्रा नगरा क नाम स पाराचत नागपुर शहर भारत म अपना महत्वपुण स्थान रखता ह । मानव का प्रकृात क साथ अटूट ारश्ता बना हुआ ह । मानव प्रकृात स सदव फायदा उठाता आया ह लाकन कभा-कभा उस प्रकृात क प्रकाप का ाशकार हाकर नुकसान भा □□□□□ □□□□ □□। इन सभा बाता का उल्लख हम वदा म भा पात ह । प्राणा जगत म मानव सवश्रष्ठ तथा ाजज्ञासु जाव ह आर इसा ाजज्ञासा क कारण, प्राकृातक पाराघटनाआ का पूवानुमान लगान तथा प्रातकुल घटनाआ पर ानयत्रण पान का प्रयास मानव करता आया ह ।

प्राकृातक आपदाआ स क्षात हाता ह इस प्राकृातक क्षात का मानव पूणरुपण राक ता नहा □□□□, लाकन इसक पूवानुमान क माध्यम स क्षात का कम करान क प्रयास अवश्य कर सकता ह । इसा वज्ञाानक दाष्टकाण का ध्यान म रखत हुय, भारत मासम ावज्ञान ावभाग का वष 1875 म स्थापना का गइ, जा अपना साक्राय भुामका ानभा रहा ह । भारत मासम ावज्ञान ावभाग ावश्व □□□□ □□□□ (WMO) का साक्राय सदस्य ह तथा मासम क क्षत्र म उस महत्वपुण स्थान प्राप्त ह । उक्त बाता का ध्यान म रखत हुय, भारत मासम ावज्ञान ावभाग का काय कुल छः(6) प्रादाशक कन्द्रा क माध्यम स चलाया जाता ह , ाजनम स हमारा प्रादाशक मासम कन्द्र, □□□□□ □□ □□ □□। □□ कायालय स नागपुर शहर क साथ-साथ सपुण ावदभ, मध्यप्रदश तथा छात्तसग□ क ालय मासम सवाए दन तथा प्रशासकाय ानयत्रण रखन क उत्तरदाायत्व का पालन ाकया जाता ह । □□□□□ □□□ का महत्व दखत हुय एक शतक □व नागपुर ास्थत मया हाास्पटल म एक मासम वधशाला का स्थापना का गया । वष 1947 म नागपुर सानगाव हवाइअड्ड पर प्रथम श्रणा का मासम कायालय □□□□ □□□ □□□ □□□ म वष 1954 म उस प्रादाशक मासम कन्द्र नागपुर का दजा दकर सानगाव हवाइअड्ड पर हा स्वतत्र भवन म स्थाापत ाकया गया जा आज भा 24 घट अपना ानरतर सवाए प्रदान कर रहा ह । भारत कृाष प्रधान दश ह तथा नागपुर क पारसर म ावशष रुप स सतरा एव कपास का उत्पादन ाकया जाता ह । इसक ालय मासम पूवानुमान क जाराए जल-वायु का साथक उपयाग ाकया जाता ह । आज नगर म शायद हा काइ एसा क्षत्र हा जा मासम ावभाग तथा उसक काया स अनााभज्ञ हा । हमारा कायालय मासम सबाधत तत्वा का एकत्राकरण करक उनका ावश्ल□□ □□□□ □□□□ ानयामत रूपस □वानुमान जारा करता ह, जा सभा क ालय सहायक एव उपयुक्त ासद्ध □□□□ □□। स्वतत्रता क पश्चात, सपूण दश म आद्याागक, हारत एवम वज्ञाानक क्राात का प्रारम्भ □□ । नागपुर म भा कइ उद्याग स्थाापत हुय एव ानकट भावष्य म स्थाापत हाग । इन □□□ उद्याागा का मासम तथा □□□□□□□□□ □कड समय समय पर उपलब्ध कराय जात ह । ाचाकत्सा क क्षत्र म भा आकड उपलब्ध कराए जात ह, तााक तदनुसार कायवाहा कर सक । ावमानन सवा क ालय गतव्य स्टश□ /स्थान का त्वरात एव तत्काालक जानकारा उपलब्ध कराइ जाता ह । शासकाय एव नगराय ानकाया, पुालस, सन्य बल , अध-सन्य बला आाद सगठना का भा पूवानुमान स अवगत □□□□□ □□□□ □□। ाावाभन्न कारणा स पयावरण पर हान वाल प्रभाव का कम करन हतु पूवानुमान एव मासम आकड उपलब्ध कराय जात ह । ावभाग का अपना एक स्वतत्र भूकम्प वधशाला जयप्रकाश □गर नागपुर म कायरत था तथा भूकम्प सम्बधा जानकारा लागा तक पहुचाइ जाता था, लाकन एक समझात क तहत वष 2003 म इस भू-ावज्ञान सव ावभाग का हस्ताातरत ाकया गया । □□□□ आकडा का जानकारा अनक शाक्षाणक तथा व्यवसाायक सस्थाना का अनुसधान आाद काया क ालय

उनकी मांग पर उपलब्ध कराया जाता है । शैक्षणिक, व्यवसायिक संस्थानों के विद्यार्थियों एवं प्रशिक्षणार्थियों को विभागीय कार्य प्रणाली से समय-समय पर परिचित कराया जाता है । [illegible] का समय बध्द पूर्वानुमान एवं चेतावनी विभिन्न प्रचार माध्यमों के जरिए प्रसारित कि[illegible] विनाशकारी मौसम घटनाओं से कृषि, [illegible], विद्युत, संचार आदि साधनों के अनुरक्षण के लिये समय समय पर पूर्वानुमान एवं चेतावनी दी जाती है ताकि उसका समुचित उपयोग हो स [illegible] । [illegible]-स्पर्धाएं, [illegible]रेला, अन्य प्रक[illegible], निर्माण कार्य आदि में बाधा [illegible]ने की संभावना कम करने हेतु भी मौसम पूर्वानुमान उपयुक्त है ।

[illegible]-अड्डा अंतरराष्ट्रीय हवाई-अड्डा घोषित होने के उपरांत एवं मिहान परियोजना के कारण हमारी जिम्मेदारियों में वृद्धी हुई है । सभी प्रकार के विमानों उड्डानों के लिये आवश्यक मौसम जानकारी हमारे विभाग द्वारा समय-समय पर प्रदान की जाती है । [illegible] मौसम पूर्वानुमान /सेवाए अधिक प्रभावशाली बनाने के लिये पुराने उपकरणों को बदलकर कई अत्याधुनिक उपकरणों एवं प्रणालियों का समावेश नागपुर कार्यालय में किया गया है । इनमें कुछ उल्लेख[illegible] डाप्लर वेदर राडार, तथा अन्य इलेक्ट्रानिकी-प्रकाशीय उपकरण प्रणाली । इनका उपयोग करके मौसम का सटीक पूर्वानुमान दिया जाता [illegible] । आजकल मौसम आंकडों का उपयोग, संरचना निर्माण, राहत और बचाव कार्यों में बाधा, देरी, [illegible], आदि सुनिश्चित करने में होता है । [illegible] विभाग व्दारा प्रेषित, दैनिक, साप्ताहिक, मासिक, स्थानिय, क्षेत्रीय, प्रादेशिक, राष्ट्रीय मौसम पूर्वानुमान तथा दिये जानेवाले रिपोर्ट, विभिन्न कृषि, उद्योग, [illegible]-[illegible]-निपटारों, व्यवसायिक संगठन आदि व्दारा प्रचुर मात्रा में किया जाता है । अतिवृष्टि, गर्मी, सर्दी आदि के समय नागपुर तथा परिसर के सभी संबंधित व्यक्ति, पक्षकार तथा कार्यालयों को समय-समय पर आवश्यक पूर्वानुमान जारी किये [illegible] जो प्राकृतिक परिघटनाओं का प्रभाव कम करने में सहायक सिद्ध होते हैं । [illegible] परिसर के लोगों को मौसम संबंधी सभी प्रकार की जानकारी हमेशा (24 [illegible]) मिलती रहे, इसके लिये इस कार्यालय की अपनी स्वतंत्र वेबसाइट **www.imdnagpur.gov.in** इंटरनेट पर उपलब्ध कराया [illegible] । इस वेबसाइट पर मौसम संबंधी आवश्यक सभी दैनिक जानकारी प्रेषित की जाती है । [illegible] वेबसाइट का उपयोग अनेक व्यक्ति /[illegible]-अपने क्षेत्रों के लिये करते हैं । उपरोक्त तथ्यों [illegible] यह स्पष्ट है कि, नागपुर शहर के समग्र विकास में प्रादेशिक मौसम केन्द्र नागपुर का यथोचित [illegible] । भविष्य में भी यह विभाग अपनी आधुनिक यंत्रणा तथा नवी[illegible] माध्यम से नागपुर शहर के सर्वांगीन विकास में अपनी निरंतर सेवायें देकर अग्रसर रहने का प्रयास [illegible] ।

****

समृद्ध राष्ट्र का निर्माण

- शांता उन्नीकृष्णन, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

□□ □मारा देश कई विकासशील देशो मे से एक है । हमारी संस्कृति काफी धनी है, हमारी धरती कई पुण्य महात्माओं और ज्ञानियों की भूमि है । ऐसी धरती पर जन्म लेना ही परम सौभाग्य की बात है । भारत देश विविध भाषा - भाषी धर्म, एवं संस्कृतियों की भूमि है । अपने विचारों को खुली तौर पर व्यक्त करने की आजादी है । इतनी सारी अच्छाइय□□□□□ पर भी आज की परिस्थितियों को देखकर बर्बस ही परतंत्र भारत की याद हो उठती है । कम □□□□ □□ □□ समय एक जुट तो थे और देश में होने वाले अत्याचारों से लोगों को मुक्त करने के लिए एक जुट होकर विदेशियों को देश से भगाने में कामयाब भी हुए ।

आज कोई विदेशी ताकत हमारे या आप के बीच नहीं है फिर भी एक दूसरे पर को□ □□□□□□,अपनी ताकत को दर्शाने या थोपने या श्रेय लेने की होड़ लगी हुई है । इससे विकास कछुए की चाल चल रही है और उससे उत्पन्न होने वाली समस्याएँ तेजी से देश में व्याप्त हो रही है । इस तरह की समस्याएँ इंसान के सोच पर भी प्रभाव □□□□□□□□ □□ □□ □□ तरह की समस्याएँ□उत्पन्न करती हैं । उदाहरण के तौर पर एक गरीब व्यक्ति सबसे पहले □□□□ 'रोटी' जुटाने के लिए तत्पर होगा क्योंकि वह पहले संतृप्त ह□□□ तभी वह दूसरी चीजों के बारे में सोच पाएगा। लेकिन कभी - कभी संतृप्त व्यक्तियों के बीच अपने आप को श्रेष्ठ साबित करने की होड़ लग जाती है जिससे कई बार भ्रष्टाचार निर्मित हो जाता है । कहने का तात्पर्य यह है कि कई समस्याएँ अदृश्य होकर दूसरी समस्याओं□□ निर्माण करती है ।

आज भी हमारी विचारधारा में पूर्ण परिवर्तन नहीं आया है । आज देश स्वतंत्र होने पर ''परतंत्रता'' से भी कई विकट समस्यायें हमारे सामने ख□□ है । जैसे भ्रष्टाच□□,□□ □□ □□ अंदर से ही खोखला कर रही है । इससे देश कितना भी विकासशील रहे उसके परिस्थितियो में ठहराव सा आ जाता है । भारत देश एक समय सोने की चिड़िय□ □□□□□ □□ □□□□□□□ ,चांदी और दूध की नदियां बहती थी । इतने सुसंस्कृत और समृध्द देश की आज क्या स्थिति है हम सब देख ही रहे हैं जहाँ भ्रष्टाचार देश को दीमक की तरह खा रहा है वहीं नारीयों की सुरक्षा एवं सम्मान खतरे में है ।

स्वस्थ राष्ट्र निर्माण के लिए आपसी सम्मान की भावना रखनी होगी । धर्म, जाति के □□□ □□ □□□ई खत्म □□□□ □□□□ / कुछ चीजें देखने में छोटी अवश्य लगती है लेकिन कभी - कभी यही छोटी समस्याये विकराल रूप धारण कर लेती है औ सारी अच्छाईयों को अपने □□□ □□□ □□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□ -□□□ □□□ □□□ □□''पैर उतने ही फैलाओ □□□□□ □□□□ □□'' । यह देश के हर व्यक्ति के लिए लागू होता है । इन समस्याओं क□ □□ मुख्य कारण देश की आबादी है जो तरह - तरह की कठिनाइयाँ उत्पन्न □□□□ □□ □□ समस्याओं से जूझने के लिए आत्म संतुलन का होना आवश्यक है जो सामूहिक रूप से एक जुट होकर ही निपटाया जा सकता है । देश को यदि समृध्द करन□ □□ □□ □□ -एक व्यक्ति की नैतिक जिम्मेदारी है कि एक स्वस्थ और समृध्द भारत का निर्माण करे ।

****

क्या हम यह नहीं जानते कि आत्म सम्मान
आत्म निर्भरता के साथ आता है ?

- **ए.पी.जे.अब्दुल कलाम**

हिंदी पखवाड़ा

-एम.आर.कान्होलकर, वैज्ञानिक सहायक

आया हिंदी का पखवाड़ा [illegible]
चले पद्रह दिन मौज-मस्ती [illegible]
है त्यौह[illegible] [illegible],पर्व है बहुत खास ।।
होती विविध स्पर्धा, [illegible]

दिवस पहला है समारोह का आज
[illegible]-[illegible], [illegible]
मन लुब्ध है इससे सभी जनो का
लुत्फ उठाये इसका सभी सज्जन
[illegible]-मस्ती, धूम का है उद्यान ।

आया हिंदी का पखवाड़ा [illegible]
चले पद्रह दिन मौजव[illegible]

[illegible]-नव परिधान
महिलाएं करती है साज श्रृंगार
[illegible]
[illegible]

आया हिंदी का पखवाड़[illegible]
चले पद्रह दिन मौजव[illegible]

[illegible]-अलग नाम रूप की स्पर्धा
तत्व [illegible], मन वचन और कर्म है एक
हिंदी ज्ञान की ज्योत ये[illegible]
[illegible], [illegible], [illegible]
चमके कार्यालय का कोना -[illegible]

आया हिंदी का पखवाड़[illegible]
चले पद्रह दिन मौजव[illegible]

[illegible]निराले है बोल
[illegible]
कोविद, ज्ञानी, पंडित[illegible]
गायक गाये सात सुरो की सरगम

[illegible]-विवाद का अखा[illegible]
आया हिंदी का पखवाड़[illegible]
चले पद्रह दिन मौजव[illegible]

ये खोले मुक्ति की राहे
□□□□□दिलो की तारे
बुध्दी □□ □□□□□ □□ □□
विश्वास और आस्था करे सबल
अचेतन जीवन मे जैसे चेतना हो प्रबल

आया हिदी का पखवाड़□ □□
चले पद्रह दिन मौजव□□ □□

□□□ □□ □□□ □□□□□□ □□□□
सगठित होकर, □□भाव से कर्मठ बने हर तबका
□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□, मानो हो सयुक्त परि□□
सयोजन ही है इसका, कि भूल जाते हम अपना घर-व्दार

आया हिदी का पखवाड़□ □□
चले पद्रह दिन मौजवा□□ □□

यह हर वर्ष, प्रति वर्ष आए और जाये
नववर्ष की तरह लगे हरदम नवागत
□□□ □□□ □□ □□□□□□□□□ - □□□□
नवागतुक भी होय अचम्भा, □□ □□□□□
जैसे हो अनेकता मे एकता का जमावड़□

आया हिदी का पखवाड़□ □□
चले पद्रह दिन मौजव□□ □□

□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□□□□□ □□□□
ये अपूर्व, □□□□□, अद्भु□ □□□□□□ □□□□
है आरजु मेरी, ये साल मे हो दोबारा
विश्वास □□□ □□□□□, मनायेगे खूब मनायेगे
□□ऐसा हमारा हिदी पखवा□□

आया हिदी का पखवाड़□ □□
चले पद्रह दिन मौजवा□□ □□

****

कृषि वसंत (रिपोर्ट)

-एस.एन.बिदयांता, वैज्ञानिक सहायक

' कृषि □□□' देश की सबसे बड़ी राष्ट्रीय कृषि प्रदर्शनी व मेला केंद्रीय कपास अनुसधान सस्थान (CICR), □□□□□, के परिसर मे 9 -13 फरवरी, 2014, के दौरान कृषि मत्रालय, □□□□ □□□□□, महाराष्ट्र सरकार और भारतीय उद्योग परिसघ एव केंद्रीय कपास अनुसधान सस्थान के सयुक्त यास के द्वारा आयोजन किया गय □ □□□□□□ राष्ट्रपतिजी श्री प्रणब मुखर्जी रविवार 9 फरवरी, 2014 पर कृषि मेला-□□-प्रदर्शनी ' कृषि □□□' का उद्घाटन किया। महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री के शक□ □□□□□□□, केन्द्रीय कृषि मत्री श्री शरद पवार, मुख्यमत्री श्री पृथ्वीरा□ □□□□□, प्रफुल्ल पटेल, राज्य कृषि मत्री राधा कृष्ण विखे पाटिल भी उद्घाटन समारोह मे उपस्थित थे। सयोग से यह प्रसग भी स्वर्गीय श्री वसत राव नाइक के शताब्दी समारोह, जो महाराष्ट्र मे कृषि विकास के हरित क्राति युग मे अपना योगदान दिया था , □□□□□ ही □ □□□

क्षेत्रीय मौसम विज्ञान केद्र, नागपु□ □□श्री पी वं□ □□□□□□, श्री एस एन बिदयाता, □□. □., श्री एम आर कान्होलकर , □□. □., श्री □□ □□ □□□□□□□ , □□.ए और श्री तुषार देशमुख, AMFU, सिदेवाही , भारत मौसम विज्ञान विभाग के□उप महानिदेशक (कृषि) कार्यालय, □□, की □□ □श्री वे□□□ □□□□□, □□. □., श्री एस वाइ वाघमारे, □□. □. , □□ प्रदर्शनी के दौरान मे सक्रिय रूप से अपना योगदान दिया । इस प्रदर्शनी मे हम विभागीय गतिविधि , एग्रीमेट प्रभाग की हाल की गतिविधि और प्रदर्शन के लिए विभिन्न परम्परागत, ऑटो ग्राफिक और स्वचालित रिकॉर्डिंग उपकरणो पर विभिन्न कलाकृतियो का प्रदर्शन किया गया। डॉ. पी के □□□□□□, उप महा निदेशक , □ □□□□□□, □□□□□ □ □□□□□□ □□□□□ मे दो बार दौरा किया और किसानो / दर्शको की प्रतिक्रिया के बारे मे भी जानकारी हासिल की ।

हमारी अर्थव्यवस्था मे किसानो के □□□न योगदान का जश्न मनाने के लिए ' कृषि □□□' 2014 किसानो आयोजित किया गया था और पूरे देश से किसान एव अन्य शेयर धारको की एक बड़ी मण्डली इस मेले मे शामिल हुये । घटना की अद्वितीय विशेषताए भी

क्षेत्रीय भाषाओ मे 300 से अधिक विभिन्न फसल , □□□,पक्षियो □□□ मछली, □□□□□ □□ उत्पादो के सफल और अभिनव किसानो और किसान □□□ मध्य □□□ □ज्य स्तरीय वैज्ञानिको के बीच गहन बातचीत और संबंधित विभाग के लाइव प्रदर्शनो शामिल थे । यह किसानो को सशक्त और हितधिकारियो कृषि समुदाय के एक छत के नीचे अपनी कृ उत्पन्न एव □□ज मे सुधार करने मे लाभ प्राप्त हुआ ।

किसानो, व्यापारियो, शोधकर्ताओ और अन्य कृषि व्यवसाय मे शामिल एकीकृत Agromet □□□□□□ □□ □ □ □□ □ □□□ Agromet □□□□□□ □□□,जिला स्तरीय मूल्य जोड़ा गया मौसम की भविष्यवाणी के बारे मे विशेष रूप से विभाग की विभिन्न गतिविधियो के बारे मे समझाया □□□ और सुविधा योजना ब्लॉक के बारे मे मौसम की भविष्यवाणी और मौसम की 'ग्रामीण कृषि मौसम सेवा' □□ □□□ □ □□□ Agromet □□□□□□ की जानकारी प्रदान की गयी। कई राज्यो के विभिन्न जिलो से किसानो प्रदर्शनी एग्रोमेट प्रभाग की बूथ □□ □रा किया। वे कैसे और कहाँ से Agromet सलाहकार जानकारी उपलब्ध होग□ □□ □□□□□ के बारे मे विशेष रूप से रुचि रखते १ □ वे पूर्वानुमान और सलाहकार अपने जिलो के लिए नियमित रूप से सप्ताह मे दो बार उ की जाती □□ □ □ □□ □□□□□ □□ □ □□□□ □□ उपलब्ध है और साथ ही स्थनीय समाचार पत्रो, नजदीकी कृषि विज्ञान के , रेडियो और टेलीविजन पर है यह □□□□ भी उन्हे दी गई । Agromet सलाहकार भी जो किसान पोर्टल मे पंजीकृत है किसानो के□मोबाइल पर एसएमएस के माध्यम से प्रसारित होता है। उनमे से कुछ किसान पोर्टल से मोबाइल एसएमएस की प्राप्ती का भी □□□ □□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ खुश है और व□ दैनिक नियोजन के लिए लाभकारी भी है । किसानो की सबसे सकारात्मक साधनो को जवाब दिया और पीएच मीटर के बारे मे पूछा / मृदा परीक्षण प्रयोगशाला। देश के विभिन्न हिस्सो से लगभग 350 किसानो से फीडबैक प्राप्त हुई थी। अलग स्कूल / □□□□ □□□□ □□छात्रो □□भी हमारे बूथ का दौरा किया। वे मौसम साधनो और उनके कार्यो मे अधिक रुचि दिखाया।

पिछले कुछ दशको मे, □□□□-अन्न उत्पादन जनसख्या वृद्धि को पार कर गया। कृषि विकास कृषि के क्षेत्र मे लोगो के लिए खाद्य और पोषण सुरक्षा सुनिश्चित करता है। कृषि □□ सम्बद्ध क्षेत्रो इस प्रकार समावेशी विकास के लिए महत्वपूर्ण है। कृषि मौसम विज्ञान प्रभाग, भारत मौसम विज्ञान विभाग , पृथ्वी विज्ञान मत्रालय, भ□□□ □□□□□, अग्रणी प्रभाग □□□□ □□□□ / राज्य / राष्ट्रीय स्तर पर किसानो को Agromet सलाहकार सेवा प्रदान करता है □□□

फसल क्षति को कम करने के लिए और अधिक कृषि उपज हासिल करने के लिए GKMS □□ तहत ब्लॉक/ग्राम स्तर पर तक पहुचने के लिए बढीया :□□□□ □□

कृषि वसंत प्रदर्शन में प्रा.मौ.केंद्र,नागपुर के स्टॉल पर किसानों के भीड़ का □□□□

****

यम

-एस.एन.बिदयांता, वैज्ञानिक सहायक

फुरसत में बैठा मोबाईल में रहा था मैं खेल,
उसी वक्त किसी बंदे का नंबर हुआ था मुझे फेल ।
अंज[illegible]न[illegible] स[illegible] नंब[illegible] [illegible], कॉल करने से मैं घबराया ,
फिर भी हिम्मत कर , नंबर दोबारा मैं घुमाया ।

इस ओर से पुछा मैं, [illegible] [illegible]भल[illegible] क[illegible]न ?
[illegible] [illegible] से [illegible] [illegible], जी यमलोक से हुं मैं यम ।
भारी यम के स्वर से, ज[illegible] मेर [illegible],
तुरंत बोला मैं, भाई नंबर गलत क्यों है घुमाया ।

मध्य रात्री के मजाक से, मैं उनपर गुस्साया,
वक्त यही सही है, कह वह झल्लाया ।
समझ गया मैं, [illegible] न [illegible] मेर सुख चैन ,
जानना ही होगा, कैसे [illegible] गय[illegible] मेरेन [illegible] क[illegible] चयन ?

[illegible], [illegible] [illegible] अ[illegible]न[illegible] न[illegible]म [illegible] [illegible],
कहा मैंने, जब कॉल है किया तो है सब कुछ आपको पता ।
मौका देख कहा मैंने, डेटा सर्वर में है आपके प्रोबलेम ,
[illegible]यम , अकारण ही न लगाओ तुम चित्रगुप्त पर ब्लेम ।

फिर भी पहचान तुम्हार , हासिल मैं करता हुं ,
[illegible] [illegible]सके कहानी आपकी भी मैं सुनता हुं ।
[illegible] [illegible] [illegible] से [illegible] यम [illegible] भग[illegible]न ,
मैंने कहा, प्रभु ! कार्य करता हुं , मैं मौसम विज्ञान ।

[illegible] [illegible], अब न होगा तुम्हारा छु[illegible] ,
अपने कार्य से है तुमने कई भगवानों को ललकारा ।
कहा मैंने, केवल वर्षा का ही तो पुर्वानुमान करता हुं ,
हर दिन, इंद्र जी की नाराजगी भली भांती मैं झेलता हुं ।

वर्षा कम अगर आंका हो, तो अधिक वे बरसाते हैं,
और पुर्वानुमान का वो मेरे, धज्जियां पुरी उडाते हैं ।
अधिकतम और न्युनतम के [illegible]में, उलझे हम रहते हैं,
सुर्यदेव से वंछित हमें, बादल घेरे रखते हैं ।

दिशा और वायु गती से, सिस्टम रुख बदलते हैं,
अंदाज इसकी देखकर , वायुदेव रुठ जाते हैं ।
म[illegible]सम के [illegible]स क[illegible]म क[illegible], निष्ठा से मैं करता हुं ,
त्रुटी गर हो जाए, खेद व्यक्त मैं करता हुं ।

कहें यम बडे गर्व की बात है, अंदाज अच्छा तुम करते हो,
मरने वालों का अंदाज, फिर क्यों न तुम करते हो ?
भुकं[illegible], बाद जैसे त्रासदी से, क्यों लोगों क[illegible] तुम [illegible] ?
अपनी भूल का खामियाजा, क्यों NDMA केस [illegible] म[illegible]ते [illegible] ?

लाख कोशिश कर भी लो, बच फिर भ[illegible]
प्रण तुम ये [illegible], [illegible]
कहा मैंने, प्रण करना तो मुश्किल है, मौसम कार्य गर करना है,
[illegible], मरने की बात है गर , तो बचना मेरा निश्चित है ।

करता हुं प्रार्थना प्रभु , दर्शन दो तुम हमें साक्षात,
क्यों करते हो भगवन, य[illegible] तुम पक्षपात ?
[illegible], [illegible],
बात चलाई फिर आगे, ले चुस्कियां फिर मैंने ।

प्रभु, क्या आप सैर करेंगे, इस बंदे के वाहन में ?
देख तो लें आप जरा, यह जग है किस हालत में ?
निश्चित ही चलूंगा, जान[illegible] ,
न मानूंगा शर्त तुम्हारे, फिर कोई भी बचने का ।

देख मां और बिटीया की हालत, [illegible] ,
भुख और लाचारी से, गरीब फिर भी न मर पाए ।
झूठ का बोलबोला है और चोरों के गोरख धंधे है ,
सच का निशान नही और सच्चाई का न रखवाला है ।

[illegible], [illegible] तुम्हें ब[illegible],
[illegible], क्या कोई भी बच पाना है ?
तुम माया से लिप्त हो, पर पुण्य कार्य करते हो ,
और लोगों को मरने से, पहले ही आगाह करते हो ।

युं निष्ठा से काम करना, निष्ठावानों का कर्तव्य अपितु,
[illegible] , और जी भर जीओ तथास्तु !
इतने में फिर फोन बजा और बोल प[illegible] चित्रगुप्त,
बंदा नही है वह प्रभु, जिन्हें करना हैं तुम्हें मुक्त ।

प्रभु , [illegible] और मैं सजा का पात्र हुं ,
डेटा सर्वर में था प्रोबलेम , अपने सर लेम लेता हुं ।
मुक्त किया बेचैनी से, जब चित्रगुप्त और यम ने हमें,
और पत्नी ने जगाया हमें, क[illegible] "ऑफिस क्या नही जाना तुम्हें ,
ऑफिस क्या नही जाना तुम्हें "?

****

विकास की कोई सीमा नहीं है । मैं हमेशा अपना विजन दोहराता रहता हूँ सपने देखकर ही आप उन्हें पूरा कर सकते हैं ।

-धीरूभाई अं[illegible]

मौसम रिक्रिएशन क्लब

-एस.ए.पवार, प्रशा. स.

मौसम कार्यालय नाम से ही आप लोग जान गए होंगे की यहाँ कार्य करने वाले कार्मिकों का मुख्य कार्य मौसम संबंधी कार्यों की जानकारी देना । मौसम यह मानव जीवन का एक अटूट अंग है । जीवन के कई पहलुओं का निर्णय मौसम के आधार पर लिया जाता है । अतः मानव जीवन में मौसम की एक महत्वपूर्ण भूमिका है । यहाँ कार्य करने वाले कार्मिक केवल पूर्वानुमान देना ही नहीं बल्कि विविध कलाओं से परिपूर्ण है ।

कार्यालय ने कार्मिकों के अंदर छिपे हुए कलाओं को उजागर करने के साथ ही उनके स्वास्थ्य को अच्छा बनाए रखने के उदेश्य से ''मौसम रिक्रिएशन क्लब'' की स्थापना की है । कार्यालय में वर्ष में एक बार विविध खेलकूद प्रतियोगिताओं के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया जाता है और सामूहिक भोजन किया जाता है ।

कार्यालय में क्रिकेट, वॉलीबाल, बैडमिनटन, कॅरम तथा चेस आदि की भी टीम है । हर वर्ष ''भारत मौसम विज्ञान विभाग'' व्दारा आयोजित खेलकूद प्रतियोगिताओं में कार्यालय के कर्मचारीगण भाग लेते हैं और पुरस्कार भी प्राप्त करते हैं ।

****

उठो, जागो और तब तक नहीं रूको जब तक

लक्ष्य ना प्राप्त हो जाये ।

- स्वामी विवेकानंद

विरह

- डी.पी.सांधोकर, स.मौ.वि.- ।।

अपनी यह आखरी मुलाकात, हँसते हुए विदा लेता हूँ ।
अपनी यह आखरी मुलाकात, हँसते हुए विदा ले[illegible]
[illegible] (हृदय से) [illegible]
जा रही हो छोड़[illegible], नही रोकूँगा मैं तुझे ।
[illegible], यही मेरी सदीच्छा [illegible]म्हे ।
विदाइ करते वक्त, अश्रु मेरे बहेंगे ।
कलेजे के टुकडों को , [illegible]
बहने वाले अश्रुओं में भी, प्रतिबिंब तुम्हारा ही होगा ।
जरा बारीक नजरों से देखना, उसमें प्राण मेरा ही होगा ।
[illegible]-[illegible], फिर से मिलना नामुमकीन
यदि प्रवा[illegible], मार्ग एक होना आसान नहीं ।
[illegible], मैं तुम्हें ना [illegible]
फिर से अपना मिलना मुशकिल, फिर भी इन्तजार मै करूगा ।
जा रही हो छोड़[illegible], [illegible]
गल्ती से कभी मिल भी गए, तो पहचानोगी क्या
[illegible] - पलट कर देखोगी क्या
प्रत्यक्ष मे नही लेकिन आंखो से बोलोगी क्या
यदि तुम नहीं बोलोगी, फिर भी बोलेगी तुम्हारी नजर ।
अंसमजस्य हृदय की बताओगी क्या [illegible]
[illegible], फिर भी हक तुझ पर बताउंगा नही ।
तेरी शपथ लेकर कहता हूँ, फिर से प्रेम करूँगा नहीं ।
फिर से प्रेम करूँगा नहीं ।

****

श्रध्दा यह समझने में है कि आप हमेशा वो पा जाते है जिसकी आपको जरूरत होती है ।

- श्री श्री रविशंकर

हिंदी पख□□□□- 2013 के कार्यक्रमों की झलक

वंदे मातरम्

ऋतुरंग

अंक : 1 वर्ष : 2014

परिकल्पना एवं मुद्रण,

प्रादेशिक मौसम केंद्र, नागपुर - 440005.

दुरभाष: 2283394/2282398 फैक्स:2284266 ई-मेल:hindirmc@gmail.com

वेब. www.imdnagpur.gov.in